# माध्यन्दिनशतपथब्राह्मणकण्डिकानामकाराद्यनुक्रमणिका



## (अ)

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०कं० |
|---|---|
| अक्रन्ददग्निस्तनयन्निव | ६।७।३।२ |
| अकन्निमं पितरो लोकमस्मा | ७।१।१।४ |
| अक्षय्यं ह वै सुकृतं चातुर्म्मा. | २।६।३।१ |
| अगृहीते माहेन्द्रे । एष वा | ५।१।४।२ |
| अगृहीते माहेन्द्रे । एष वा | ५।३।५।२ |
| [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | ७ |
| अग्निरेष पुरस्ताच्चीयते | १०।१।१।१ |
| अग्निर्ब्रह्मेति । अग्निर्ब्रह्म | ३।२।२।९ |
| अग्निर्मूर्द्धा दिव | २।३।४।११ |
| अग्निर्वै देवाना मृदुहृदय. | १।६।२।१० |



| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०कं० |
|---|---|
| अग्निर्वै देवानां नेदिष्ठम् | १।६।११ |
| अग्निर्वै देवानामद्धातमाम् | १।६।२।९ |
| अग्निर्वै भर्गं | १२।३।४।८ |
| अग्निर्वै सर्व्वा देवता. | १।६।२।८ |
| अग्निर्होता वेत्वग्नेर्होत्रमिति | १।५।२।१ |
| अग्निर्वेश्य: सैतवात | १४।५।५।२१ |
| | १४।३।२।२६ |
| | ९।१।२।४ |
| सयुजौ | ३।४।४।९ |
| | ५।२।२।१० |
| ग्र | ७।१।१।२४ |
| | १।४।३।७ |
| यता. | ९।२।३।२८ |
| | ६।७।३।६ |
| ह्मण | १।४।२।२ |
| । इति | ७।१।१।२३ |
| तव | ७।५।१।२३ |
| ते | ८।७।१।६ |
| । | ९।३।४।९ |
| अग्नेर्भस्मास्यग्न | ७।१।१।११ |
| अग्नेर्भागोऽसि | ८।४।२।३ |
| अग्नेर्ह वै देवा. | ४।४।५।१३ |
| अग्ने वेर्होत्र वेर्दूत्यमिति | १।४।५।४ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|
| अथ पुनः प्रपद्य । आश्विनं | ४।२।५।१२ |
| अथ पुनः प्रपद्य । चतुर्गृही० | ३।५।३।१० |
| अथ पुनः प्रयुञ्जानस्य | २।६।३।१३ |
| अथ पुनः प्रसलवि | २।६ २।१५ |
| अथ पुरस्तात् । उदीचीं | ३।५।१।२८ |
| अथ पुरस्तात्परीत्य | २।१।४।२८ |
| अथ पुरा बहिष्पवमानात् | १३।५।१।१६ |
| अथ पुरीषं निवपति । तत्र | ८।५।४।९ |
| अथ पुरीषं निवपति । त० | ७।१।१।३६ |
| अथ पुरीषं निवपति । मांसं | ८।७।३।१ |
| अथ पुरुषमुपदधाति | ७।४।१।१५ |
| अथ पुरुषशीर्षमभिजुहोति | ७।५।२।२३ |
| अथ पुरुषशीर्षमुद्गृह्णाति | ७।५।२।१३ |
| अथ पुरोडाशमधिवृणक्ति | १।२।२।७ |
| अथ पुष्करपर्णमुपदधाति | ७।४।१।७ |
| अथ पूर्णपात्रान्त्समवसृ० | ४।४।३।१३ |
| अथ पूर्णाहुतिं जुहोति | ९ २।३।४३ |
| अथ पूर्वमुद्धिमादधाति | ६।५।२।४ |
| अथ पूर्वयोरुत्तरस्याम् | ३।५।२।१२ |
| अथ पूर्वार्द्धेन दक्षिणा | ९।१।२।२८ |
| अथ पूर्वार्द्धेन दक्षिणाम् | ७।२।२।१२ |
| अथ पूर्वेद्युः । अन्वाहार्य० | २।५।२।१४ |
| अथ पूर्वेद्युः । द्वौ खरौ | ५।१।२।१५ |
| अथ पूर्वेद्युः परिस्रुतः | ५।५।४।२० |
| अथ पृषती विचित्रगर्भा | ५।५।२।९ |
| अथ पृषदाज्यं गृह्णाति । | ३।८।४।७ |
| अथ पृष्ठ्यान्गृह्णाति | ५।१।२।२ |
| अथ पौष्णं चरुं निर्वपति | ५।४।५।९ |
| अथ पौष्णम् । पशवो वै | ३।९।१।१० |

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|
| अथ पौष्णीन्निर्वपति | १३।४।१।१४ |
| अथ प्रचरणीति स्रुग्भवति | ४।४।२।७ |
| अथ प्रचरणीति स्रुग्भवति | ४।५।२।९ |
| अथ प्रजापतेर्हृदय गायति | ९।१।२।४० |
| अथ प्रणीता दक्षिणातः | १।९।२।३२ |
| अथ प्रतिपद्यते । इद | १।९।१।४ |
| अथ प्रतिपद्यते । इडोप० | १।८।१।२४ |
| अथ प्रतिपरेत्य गार्हपत्यम् | ४।३।४ ६ |
| अथ प्रतिपरेत्य गार्हपत्यम० | ५।४।२।९ |
| अथ प्रतिपरेत्य गार्हपत्यमु० | २।६।१।१९ |
| अथ प्रतिप्रस्थाता । अग्रेण | ३।३।४।२१ |
| अथ प्रतिप्रस्थाता । उत्तरं | ३।५।३।२२ |
| अथ प्रतिप्रस्थाता पर्यैति | ४।२।१।१७ |
| अथ प्रतिप्रस्थाताऽभक्षितेन | ४।३।१।२१ |
| अथ प्रतिप्रस्थाता प्रतिपरैति | २।५।२।२० |
| अथ प्रतीचीन्दिशमप० | ११।१।६।२३ |
| अथ प्रत्यवरोहति । | ९।२।१।१७ |
| अथ प्रत्यवरोहाञ्जुहोति | ९।१।१।३२ |
| अथ प्रत्येत्य धिष्ण्यानां | ९।४।३।१ |
| अथ प्रथमायै स्वयमातृ० | ८।७।१।१० |
| अथ प्रथमायै स्वयमातृ० | ८।७।१।१८ |
| अथ प्रदरात्पूरीषमाहर्त्तवा | १३।८।३।१० |
| अथ प्रयौति । संसृष्टं | ६।५।१।९ |
| अथ प्रवत्स्यन् । गार्हप० | २।४।१।३ |
| अथ प्र वा व्रजति प्र वा | २।४।१।६ |
| अथ प्र वा व्रजति प्र वा | २।४।१।१२ |
| अथ प्रसुते दधिघर्म्मेण | १४।३।१।२९ |
| अथ प्रस्तरमादत्ते | १।८।३।११ |
| अथ प्रस्तरे निह्नुवते | ३।४।३।१९ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|
| अथ यदाग्नीदग्रगतः | १२।६।१।१६ |
| अथ यदाग्नीध्रीयोऽनुगच्छेत् | ६।६।४।१५ |
| अथ यदाप्याय्यमानः | १२।६।१।२० |
| अथ यदासन्नामासन्नः | १२।६।१।१५ |
| अथ यदाहवनीयः | १२।५।२।१० |
| अथ यद्युदक आत्मानम्प० | १४।९।४।६ |
| अथ यद्युदके म्रियेत | १३।३।८।५ |
| अथ यद्युपावह्रियमाणः | १२।६।१।१८ |
| अथ यद्यूरावासन्नः | १२।६।१।१२ |
| अथ यद्यूप् परिशिष्यते । | ३।८।३।२५ |
| अथ यद्येनं वाचाभिव्या० | १२।६।१।४ |
| अथ यद्येष उख्योऽग्निरनु० | ६।६।४ १० |
| अथ यद्वपया प्रचर्य | ३।८।३।२ |
| अथ यद्वरुणप्रघासैर्यजते | २।६।४।६ |
| अथ यद्वपट्कृते जुहोति । | ११।२।२।५ |
| अथ यद्वसाहोमस्य परिशि० | ३।८।३।३५ |
| अथ यद्वसुवने वसुवेयस्येति | १।८।२।१६ |
| अथ यद्वाचं यच्छति | ३।२।१।३८ |
| अथ यद्वारुणो भवति | ५।५।४।३१ |
| अथ यद्वारुणो यवमयश्चरु० | ५।२।५।१६ |
| अथ यद्विश्वजितमुपयन्ति | १२।१।३।१५ |
| अथ यद्विषुवन्तमुपयन्ति | १२।१।३।१४ |
| अथ यद्वृष्णेस्तुका भवति | ३।५।२।१८ |
| अथ यद्वैश्वदेवं ग्रहं गृह्णाति | ४।३।१।२६ |
| अथ यद्वैश्वदेवेन चरणा | ५।५।१।५ |
| अथ यद्वैष्णवः । त्रिकपालो | ५।२।५।४ |
| अथ यन्तृतीयन्दक्षिणतो | ९।३।१।२२ |
| अथ यन्तृतीयमुत्तरतो | ९।३।१।२३ |
| अथ यन्द्वितीयन्दक्षिणतो | ९।३।१।२० |
| अथ यन्द्वितीयमुत्तरतो | ९।३।१।२१ |
| अथ यन्निग्राभमुपैति | ३।९।४।२० |
| अथ यन्नैवारो भवति | ५।१।४।१४ |
| अथ यन्मरीचिषु न जुहोति | ५।३।४।२६ |
| अथ यन्महाव्रतमुपयन्ति | १२।१।३।२१ |
| अथ यन्मुखदघ्ने । उपरीव | १४।३।१।२ |
| अथ यन्मैत्रावरुण्या पय० | ५।५।१।६ |
| अथ यम्प्रथममुत्तरतो | ९।३।१।१९ |
| अथ यल्लोहमयाःपर्यङ्क्या० | १३।२।२।१८ |
| अथ यवमत्यः प्रोक्षण्यो | ३।६।१।७ |
| अथ यवाग्वैतां रात्रिमग्नि० | १।७ १।१० |
| अथ यश्चितेऽग्निर्निधीयते | ६।१।२।७ |
| अथ यश्चितेऽग्निर्निधीयते । | ६।१।२।२० |
| अथ यश्चितेऽग्निर्निधीयते | १०।४।१।८ |
| अथ यस्माच्छुनासीर्य्येण | २।६।३।२। |
| अथ यस्मात्पुरुषमेधो नाम | १३।६।२।१ |
| अथ यस्मात्समिष्टयजुर्जु० | १।९।२।२७ |
| अथ यस्मात्समिष्टयजुर्नाम | १।९।२।२६ |
| अथ यस्मात्समिष्टयजूंषि | ४।४।४।२ |
| अथ यस्मात्समिष्टयजूंषि | ४।४।४।४ |
| अथ यस्मात्संज्ञानानि नाम | १२।८।३।२६ |
| अथ यस्मात्सोमं पवित्रेण | ४।१।२।४ |
| अथ यस्मात्सोमो नाम | ३।९।४।२२ |
| अथ यस्मात्स्वरुर्नाम | ३।७।१।२४ |
| अथ यस्मादन्तर्य्यामो नाम | ४।१।२।२ |
| अथ यस्मादाग्रायणो नाम | ४।२।२।६ |
| अथ यस्मादातिथ्यं नाम | ३।४।१।२ |
| अथ यस्मादुपांशुर्नाम | ४।१।१।२ |
| अथ यस्मादुपैव तिष्ठेत | २।३।४।५ |

३

| कण्डिकाप्रतीकम् | का० अ० ब्रा० क० |
|---|---|
| अथ हैनं शश्वद्प्यसुरा उप० | २।४।२।५ |
| अथ हैनङ्कहोडः कौषीत० | १४।६।४।१ |
| अथ हैनङ्गार्गी वाचक्नवी | १४।६।६।१ |
| अथ हैनञ्जारत्कारव आर्त० | १४।६।२।१ |
| अथ हैनमसुरा ऊचुः | १४।८।२।४ |
| अथ हैनमुद्दालक आरुणिः | १४।६।७।१ |
| अथ हैनमुषस्तश्चाक्रायणः | १४ ६।५।१ |
| अथ हैनम्भुज्युर्लाह्यायनिः | १४।६।३।१ |
| अथ हैनम्मनुष्या ऊचुः | १४।८।२।३ |
| अथ हैषैव तुला यद्दक्षिणो | ११।२।७ ३३ |
| अथ होतारन्दीक्षयति | १२।१।१।४ |
| अथ होता परिवृक्तामभि० | १३।५।२।७ |
| अथ होता सप्त छन्दांसि | १०।१।२।९ |
| अथ होतुः पाणौ समवद्यति | १।८।१।१७ |
| अथ होतुरिद्द निलिम्पति। | १।८।१।१५ |
| अथ होतृषदन उपविशति | १।५।१।२४ |
| अथ होतृषदनमुपावर्त्तते | १।५।१।२३ |
| अथ होत्राणां चमसानभ्यु० | ४।२।१।३१ |
| अथ होत्रा संयाजयन्ति | ४।२।१।३२ |
| अथ होवाच। अन्वा अहं | २।१।२।१६ |
| अथ होवाच। गोतमो राहू० | १।४।१।१८ |
| अथ होवाच जनं शार्क० | १०।६।१।९ |
| अथ होवाच बुडिलमाश्वत० | १०।६।१।७ |
| अथ होवाच महाशालजा० | १०।६।१।६ |
| अथ होवाच याज्ञवल्क्यः | ११।६।२।४ |
| अथ होवाच याज्ञवल्क्यः | १३।५।३।६ |
| अथ होवाच सत्ययज्ञम्पौ० | १०।६।१।५ |
| अथ होवाच सात्ययज्ञिः | १३।४।२।४ |
| अथ होवाच सोमशुष्मः | ११।६।२।३ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | का० अ० ब्रा० क० |
|---|---|
| अथ होवाचारुणिः | १२।४।१।११ |
| अथ होवाचेन्द्रद्युम्नम्भाल्ल० | १०।६।१।८ |
| अथाक्रमते। विष्णुस्त्वा | १।१।२।१३ |
| अथाक्षान्निवपति। स्वाहा० | ५।४।४।२३ |
| अथाक्ष्यावानक्ति। अरुर्वै | ३।१।३।१० |
| अथाखुकरीषं सम्भरति | २।१।१।७ |
| अथाग्नये गृहपतये | ५।३।३।२ |
| अथाग्नये परिदाय स्वपिति | ३।२।२।२२ |
| अथाग्नये पावकाय निर्वपति | २।२।१।७ |
| अथाग्नये शुचये निर्वपति | २।२।१।८ |
| अथाग्निं कल्पयति शिरो वै | १।३।३।१२ |
| अथाग्निं गृहपतिं यजति | १।९।२।१३ |
| अथाग्निमभ्यावृत्य वाचं | ३।२।२।८ |
| अथाग्निमारोहति। नमस्ते | ९।२।१।२ |
| अथाग्निमारोहन्ति। क्रमध्व० | ९।२।३।२४ |
| अथाग्निमीक्षमाणो जपति | १।५।१।२६ |
| अथाग्निरुत्तमः। गायत्री | १।८।२।१३ |
| अथाग्नीदाहानुप्रहरेति | २।५।२।४३ |
| अथाग्नीदाहानुप्रहरेति | २।६।१।४६ |
| अथाग्नीदाहानुप्रहरेति | १।९।२।१७ |
| अथाग्नीदाहानुप्रहरेति | १।८।३।१९ |
| अथाग्नीध्रः। आहवनीये | १४।३।१।२ |
| अथाग्नीध्रे। द्वे वै कां | ४।३।४।११ |
| अथाग्नीषोमीयेण पुरोडा० | ५।३।३।१० |
| अथाग्नेयी। तदग्नय | २।३।४।४० |
| अथाग्नेयीमिष्टिन्निर्वपति | १३।४।१।१२ |
| अथाग्नेर्विधाः। अष्टा० | १०।२।३।११ |
| अथाग्रयणम्। आत्मने | ४।५।६।३ |
| अथाग्रयणेष्ट्या यजते | ५।२।३।९ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|
| अथास्मै व्रतं प्रयच्छति | ३।२।२।१६ |
| अथास्मै व्रतं श्रपयन्ति | ३।२।२।१० |
| अथास्मै श्मशानङ्कुर्वन्ति | १३।८।१।१ |
| अथास्मै सावित्रीमन्वाह | ११।५।४।६ |
| अथास्य पुरोडाशस्यावदाय | २।६।१।३५ |
| अथास्य मातरमभिमन्त्र० | १४।९।४।२७ |
| अथास्य सप्तसु प्राणायतनेषु | १२।५।२।६ |
| अथास्य हस्तं गृह्णाति | ११।५।४।२ |
| अथास्यां पय आनयति | ७।१।१।४४ |
| अथास्या हिरण्यं बद्धं भवति | ४।६।१।६ |
| अथास्यां हिरण्यं बद्धं भवति | ४।६।१।८ |
| अथास्या हिरण्य बध्नीते | ३।३।२।२ |
| अथास्या सिकता आवपति | ७।१।१।४१ |
| अथास्या ऊरू विहापयति | १४।९।४।२० |
| अथास्या एतदेव तुरीयं | १४।८।१५।४ |
| अथास्यामाशिष आशास्ते | १४।१।३।१८ |
| अथास्यायुष्यङ्करोति | १४।९।४।२५ |
| अथास्यै बिलमभिपद्यते | ६।५।२।२० |
| अथास्यै मध्यमेवतामिति | १३।२।९।४ |
| अथास्यै स्तनमभिपद्यते | १४।२।१।१५ |
| अथाह । इयं ते राण्मित्राय | ९।३।३।१० |
| अथाह कामधुक्ष इति | १।७।१।१७ |
| अथाह पर्यग्नयेऽनुब्रूहीति | ३।८।१।६ |
| अथाह पितृभ्यः सोमव० | २।६।१।२६ |
| अथाह पितृभ्योऽभिष्वात्ते० | २।६।१।२९ |
| अथाह पितृभ्यो बर्हिष० | २।६।१।२८ |
| अथाह प्रतिप्रस्थाता शृता | ३।८।२।२३ |
| अथाह प्रोक्षणीरासादयेति | १।२।५।२० |
| अथाह प्रजनमस्यास्यामि | २।६।१।४४ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|
| अथाह मरुद्भ्यो गृहमेधि० | २।५।३।९ |
| अथाह मरुद्भ्यो गृहमेधि० | २।५।३।१४ |
| अथाहवनीय एवाप्यानव० | ७।३।१।१२ |
| अथाहवनीयमुपतिष्ठते | १।९।३।२२ |
| अथाहवनीयमुपतिष्ठते | २।४।१।५ |
| अथाहवनीयागारस्य वा | १।७।१।८ |
| अथाह वार्षाहरं साम | १४।३।१।२६ |
| अथाह संवदस्वेति । अगान० | १।९।२।१८ |
| अथाह संवदस्वेति । अगान० | २।५।२।४४ |
| अथाह संवदस्वेति । अगान० | २।६।१।४७ |
| अथाह संवदस्वेति । संवाद० | १।८।३।२० |
| अथाह । समुल्लुप्य महतम् | ३।४।३।२२ |
| अथाह । सम्राडयमसौ | ५।२।२।१५ |
| अथाह साम गायेति | ४।४।५।६ |
| अथाह साम गायेति | १४।३।१।१० |
| अथाह सोमः पवत इति | ४।२।२।१२ |
| अथाह सोमायानुब्रूहीति | २।५।३।८ |
| अथाह सोमायानुब्रूहीति | २।५।३।१३ |
| अथाह सोमायानुब्रूहीति | ३।४।४।१२ |
| अथाह स्तोकेभ्योऽनुब्रूहीति | ३।८।२।२२ |
| अथाह । स्तोमश्च यजुश्च | ९।३।३।१४ |
| अथाह स्वगा दैव्या होतृभ्य | १।८।३।२१ |
| अथाहाग्नये कव्यवाहनाय० | २।६।१।३० |
| अथाहाग्नयेऽनुब्रूहीति । आ० | २।२।३।२१ |
| अथाहाग्नयेऽनुब्रूहीति हविषः | २।२।३।२४ |
| अथाहाग्नये समिध्यमानाय० | ३।७।४।७ |
| अथाहाग्नये स्विष्टकृतेऽनुब्रू० | २।५।३।१० |
| अथाहाग्नये स्विष्टकृतेऽनुब्रू० | २।५।३।१५ |
| अथाहाग्नये स्विष्टकृतेऽनुब्रू० | ५।२।२।१८ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | का० अ० ब्रा० क० |
|---|---|
| अथाहाग्नये स्विष्टकृतेऽनुब्रू० | ५/३/३/१५ |
| अथाहाग्नये स्विष्टकृतेऽनुब्रू० | ५/४/४/२४ |
| अथाहाग्निभ्यः प्रह्रियमाणे० | ७/३/२ ५ |
| अथाहाभीत्पात्नीवतस्य यजे० | ४/४/२/१५ |
| अथाहुतीर्जुहोति । यथा | ९/२/३.४१ |
| अथ हेन्द्राय मरुत्वतेऽनुब्रू० | ४/३/४/२३ |
| अथेडा । अन्नाद्यमेवैतया | ११/१/६/२८ |
| अथेडामादधाति । उपहूता० | ५/२/२/१९ |
| अथेडामादधाति । उपहूता० | ५/२/२/२१ |
| अथेडामादधाति । उपहूता० | ५/४/४ २५ |
| अथेडामेवावद्यति न प्राशि० | २/५/३/१६ |
| अथेडो यजति । प्रजा वा | १/५/४/३ |
| अथेडो यजति । वर्षा वा | १/५/३/११ |
| अथेतरं वायुर्व्यशात् | ४/१/३/१० |
| अथेतरं विश्वे देवा अमरी० | ४/५/१/१० |
| अथेतरौ वेदी व्यौहत् | १०/४/२/२४ |
| अथेत्यभ्यमन्थत् । स मु० | १४/४/२/११ |
| अथेत्य स्तोत्रमुपाकरोति | ४/५/३/११ |
| अथे.ताहवनीये समिधम० | ३/६/३/२१ |
| अथेदं तृतीयम् । गृहपतेरे० | ४/६/८/१३ |
| अथेदं द्वितीयम् । अरणिष्वे० | ४/६/८/८ |
| अथेदं द्वितीयम् । आग्नेयमे० | २/२/१/२२ |
| अथेदं द्वितीयम् । तूष्णीमे० | २/१/४/२६ |
| अथेदं द्वितीयम् । सैव स्ती० | २/५/३/११ |
| अथेध्ममभ्यादधदाह | २/६/१/२१ |
| अथेन्द्रतुरीयम् । आग्नेयो० | ५/२/४/११ |
| अथेन्द्राग्नी वा असृज्येताम् | १०/४/१/५ |
| अथेन्द्राय ज्येष्ठाय हायनानां | ५/३/३/६ |
| अथेमं विष्णुं यज्ञन्त्रेधा | १४/१/१/१५ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | का० अ० ब्रा० क० |
|---|---|
| अथेमां प्रत्यवेक्षमाणो जप० | ५/४/३/२० |
| अथेमामभिमृश्य जपति | १४/१/३/२५ |
| अथेमामुपावेक्षमाणो जपति | ५/२/१/१८ |
| अथेष्टा अनुयाजा भवन्ति | ५/१/३/१३ |
| अथैकं तृणमपगृह्णाति | १/८/३/१६ |
| अथैक आज्यं निर्वपति | १/२/१/२२ |
| अथैक उद्धरति । दीक्षितो० | ३/२/१/३९ |
| अथैकादश कृत्वोऽभिषुणोति | ४/१/१/१० |
| अथैतं वायवे नियुत्वते | ६/२/२/६ |
| अथैतं विष्णुं यज्ञम् | ४/६/७/४ |
| अथैतं साये भूतेऽश्व परिण० | ७/३.२/१८ |
| अथैतत्त्रयं पिष्टं भवति | ६/५/१/६ |
| अथैतदहराश्यत् । यन्महा० | १२/२/३/३ |
| अथैतदेव परोक्षं रूपम् | २/२/३/८ |
| अथैतद्रज्जुसन्दानम् | १४/३/१/२२ |
| अथैतद्वामेऽक्षिणि पुरुष० | १४/६/११/२ |
| अथैतद्रूपा सोमः । योषा | ४/६/७/१२ |
| अथैतद्वै । आयुरेतज्ज्योतिः | १४/१/१/३३ |
| अथैतद्वै । आयुरेतज्ज्योतिः | १४/१/२/२६ |
| अथैतद्वै । आयुरेतज्ज्योतिः | १४/१/३/३४ |
| अथैतद्वै । आयुरेतज्ज्योति. | १४/१/४/१७ |
| अथैतद्वै । आयुरेतज्ज्योतिः | १४/२/१/२२ |
| अथैतद्वै । आयुरेतज्ज्योतिः | १४/२/२/५५ |
| अथैतद्वै । आयुरेतज्ज्योतिः | १४/३/१/३६ |
| अथैतद्वै । आयुरेतज्ज्योतिः | १४/३/२/३१ |
| अथैतमभिषेकम् । कृष्णविषा० | ५/४/२/४ |
| अथैतस्य नियुत्वतीयस्य | ६/२/२/३७ |
| अथैतस्य प्राजापत्यस्य | ६/२/२/३६ |
| अथैतस्य प्राणस्यापः | १४/४/३/२० |

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|
| अथैनाङ्कृष्णाजिनेनास्तृ० | १२।८।३।९ |
| अथैनाञ्छ्रपयति। शृतं हि | १४।१।२।२१ |
| अथैनानाच्छृणत्ति। अजायै | १४।१।२।२५ |
| अथैनानुपदधाति। पुरुषं | ७।५।२।१४ |
| अथैनान्धूपयति। अश्वस्य | १४।१।२।२० |
| अथैनान्परिश्रिद्भिः परिश्रयति | ९।४।३।९ |
| अथैनान्प्राच उत्क्रमयति | ६।३।२।६ |
| अथैनान्विमुञ्चति। आप्त्वा | ७।२।२।२१ |
| अथैनामभिजुहोति। एतद्वा | ७।५।१।३२ |
| अथैनामभिपद्यते। अमो० | १४।९।४।१९ |
| अथैनामाच्छृणत्ति। स्थेम्ने | ६।५।४।१५ |
| अथैनामुद्यच्छति। उत्थाय | ६।५।४।१३ |
| अथैने अभिगृह्णाति। संज्ञाने० | ६।४।१।१० |
| अथैनौ सन्निवपति। संज्ञामे० | ७।१।१।३८ |
| अथैन्द्रमेकादशकपालं | ५।४।५।१० |
| अथैन्द्रम्। इन्द्रियं वै | ३।९।१।१५ |
| अथैन्द्राग्नम्। तेजो वा | ३।९।१।१९ |
| अथैन्द्राग्नी। उभा वामि० | २।३।४।१२ |
| अथैन्द्राग्नो द्वादशकपालः | २।५।२।८ |
| अथैन्द्राग्नो द्वादशकपालः | २।५ ४।८ |
| अथैन्द्री मरुत्वती जपति | २।५।२।२६ |
| अथैन्द्री। इन्द्रो वै यज्ञस्य | २।३।४।२८ |
| अथैभ्यः पथ्या स्वस्तिः | ३।२।३।८ |
| अथैभ्यः सविता प्रारोचत | ३।२।३।११ |
| अथैभ्यः सूर्य दक्षिणामा० | ३।५।१।१९ |
| अथैभ्यः सोमः प्रारोचत | ३।२।३।१० |
| अथैभ्योऽग्निः प्रारोचत | ३।२।३।९ |
| अथैवमभिपद्य वाचयति | ३।३।४।२ |
| अथैवमभिपद्य वाचयति | ३।६।१।२० |
| अथैवमभिपद्य वाचयति | ३।७।१।१७ |
| अथैवमुपसद्य। अग्नीधे | ४।३।४।२० |
| अथैवमेवोपसद्य। आत्रेयाय | ४।३।४।२१ |
| अथैष वाव यशः। य एष | १४।१।१।३२ |
| अथैष श्लोको भवति | १४।४।३।३४ |
| अथैषा बृहत्युत्तमा भवति | ६।४।२।८ |
| अथैषु पुरीषं निवपति | ९।४।३।१० |
| अथैषु हिरण्यशकलान्प्रत्य० | ७।५।२।८ |
| अथो अपि चतस्रोऽतिरिक्ताः | ११।१।२।८ |
| अथो अपि तिस्रोऽतिरिक्ताः | ११।१।२।७ |
| अथो अपि त्रयस्त्रिंशत्स्युः | ३।५।१।८ |
| अथो अपि त्रीणि स्युः | १।१।३।३ |
| अथो अपि त्रीणि स्युः | ३।१।३।२० |
| अथो अपि द्वे अतिरिक्ते | ११।१।२।६ |
| अथो अपि नव स्युः | ११।१।२।४ |
| अथो अपि सप्त स्युः। सप्त वा | ३।१।३।२१ |
| अथो अप्याहुः। ऐन्द्राग्न | ११।८।३।३ |
| अथो अप्याहुः। सौर्य | ११।८।३।२ |
| अथो अप्येकातिरिक्ता स्यात् | ११।१।२।५ |
| अथो अप्येवैनं दद्यात् | ४।१।१।१८ |
| अथो अप्यैन्द्राग्नमेवाहरहः | ४।६।३।२ |
| अथो अभ्येव मृशेत् | ४।५।७।८ |
| अथो अयं वा आत्मा | १४।४।२।२९ |
| अथो अहोरात्रे वै रौहिणौ | १४।२।१।३ |
| अथो आहुः। अग्निमेव | ६।१।२।१० |
| अथो आहुः। प्रजापतिरेव | १०।२।३।१६ |
| अथो आहुः। प्रजापतिरेव | ६।१।२।२१ |
| अथो आहुः। प्रजापतिरेवै० | ६।१।२।११ |
| अथो आहुः। प्रजापतिरेवैतं | ९।२।३।५० |

## ( आ )

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|
| आ राष्ट्रे राजन्यः शूर | १३।१।९।२ |
| आरुक्षामि जघनेन | ७।५।२।४० |
| आरुक्षामि स्वयमातृण्णा | ९।२।१।३ |
| आर्तभागेति होवाच | १४।६।२।१४ |
| आलम्बीपुत्रात्। आलम्बी० | १४।९।४।३२ |
| आवह देवान्यजमानायेति | १।४।२।१६ |
| आ वाचो मध्यमरुहद्भुरण्यु० | ८।६।३।२० |
| आविः पूषा विश्ववेदा इति | ५।३।५।३५ |
| आवित्त इन्द्रो वृद्धश्रवा इति | ५।३।५।३३ |
| आवित्तादितिरुरुशर्मेति | ५।३।५।३७ |
| आवित्ते द्यावापृथिवी विश्व० | ५।३।५।३६ |
| आवित्तो अग्निर्गृहपतिरिति | ५।३।५।३२ |
| आवित्तौ मित्रावरुणौ घृत० | ५।३।५।३४ |
| आ विश्वतः प्रत्यञ्चं जिघ० | ६ ३।३।२० |
| आशुः शिशानो वृषभो | ९।२।३।६ |
| आशुः सप्तिरिति । अश्व | १३।१।९।५ |
| आश्रुतिरुत्तरत इति | १४।१।३।२२ |
| आश्वत्थं भवति । तेन | ५।३।५।१४ |
| आश्वत्थपात्रम्भवति | १२।७।२।१४ |
| आश्वत्थेषु पलाशेषूपनद्धा | ५।२।१।१७ |
| आश्ववालः प्रस्तरः। यज्ञो ह | ३।४।१।१७ |
| आश्वमेधिकम्मध्यमम्पशु० | १३।७।१।७ |
| आश्विनं वै वः शस्यमानम् | ११।५।५।९ |
| आश्विनमध्वर्युर्वो भक्षय० | १२।८।२।२२ |
| आश्विनावधोरामौ बाह्वोः | १३।२।२।५ |
| आश्विनीरजाः। सारस्वती० | १२।७।२।७ |
| आश्विनेन प्रथमेन यजु० | १२।८।३।१८ |
| आसन्द्या उपनद्धा उपमुञ्चते | ५।५।३।७ |
| आसन्द्यामभिषिञ्चति | १२।८।३।४ |
| आसाद्य हवींष्यग्निं मन्थति | २।५।१।१९ |
| आसाद्य हवींष्यग्निं मन्थति | २।५।२।१९ |
| आसाद्य हवींष्यग्निं मन्थति | ३।४।१।१९ |
| आसीदद्भिरश्वा भुवनानि | ३।३।४।४ |
| आसीनं भूतमभिषिञ्चेत् | ९।३।४।१४ |
| आसीनः कुर्वीतेत्यु हैक | ९।१।२।१४ |
| आसीनस्तमाधारयति । यं | १।४।४।७ |
| आसीनस्तमाधारयति । यो | १।४।४।१२ |
| आसीनो याज्यां यजति | १।४।२।१९ |
| आस्पात्रं जुहूर्देवानामिति | १।४।२।१३ |
| आस्पृष्टं परिश्रितः तद्यत्क्र० | ९।३।४।१५ |
| आस्य यजमानस्य वीरो | १३।१।९।९ |
| आहवनीय उ हैकेऽभिषि० | ९।३।४।१२ |

## ( इ )

| | |
|---|---|
| इत्थमेव कुर्यात्। अरण्यो० | १२।४।३।१० |
| इत्थमेव कुर्यात्। उदस्थाली | १२।४।१।५ |
| इत्थमेव कुर्यात्। उभाभ्या० | ११।४।२।२ |
| इत्थमेव कुर्यात्। तदेवोप० | १२।४।२।८ |
| इत्थमेव कुर्यात्। तिस्र एव | १२।५।२।३ |
| इत्थमेव कुर्यात्। पुरोडाशे० | ११।७।२।५ |
| इत्थमेव कुर्यात्। निवान्य० | १२।५।१।४ |
| इत्थमेव कुर्यात्। प्राचीमे० | ११।४।२।१५ |
| इदं वा अपूपमशित्वा | ४।२।५।१९ |
| इदं वै तन्मधु। दध्य० | १४।५।५।१६ |
| इदं वै तन्मधु। दध्य० | १४।५।५।१७ |
| इदं वै तन्मधु। दध्य० | १४।५ ५।१८ |

## ( ऊ )



## ( ऋ )



## ( ए )

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|
| एतद्धै येव प्रथमा पौर्णमासी | ६।२।२।२० |
| एतद्धै संवत्सरस्य स्वं पयः | १।५।३।५ |
| एतमु हैव चूडो भागवित्ति | १४।९।३।१८ |
| एतमु हैव जानकिराय० | १४।९।३।१९ |
| एतमु हैव मधुकः पैङ्ग्यः | १४।९।३।१७ |
| एतमु हैव वाजसनेयो | १४।९।३।१६ |
| एतमु हैव सत्यकामो | १४।९।३।२० |
| एतया सर्वाभिः । एतया | ३।३।२।१३ |
| एतयोरुभयोर्गृहीतयोः | ७।५।१।१८ |
| एतस्माद्धै यज्ञात्पुरुषो जायते | १२।९।१।१ |
| एतस्य वा अक्षरस्य | १४।६।८।९ |
| एतस्यां संस्थितायाम् | १३।४।२।१५ |
| एतस्यान्तायणानायाम् | १३।४।२।१ |
| एतस्यामाहुत्यां हुतायाम् | ६।३।१।२२ |
| एतस्यामुक्तायामुत्थाय | १३।५।२।१६ |
| एतां ह वै मुण्डिभ औद० | १३।३।५।४ |
| एताभिर्वै देवा उपसद्भिः | ३।४।४।५ |
| एताभिर्वै देवताभिर्वरुण | ५।४।५।५ |
| एतावान्वै सर्वो यज्ञः | ८।६।१।१० |
| एता वै देवताः भवर्ग्यः | १४।३।२।२४ |
| एता ह वै देवता योऽस्ति | २।३।२।१ |
| एता ह वै देवताः सवस्येशते | ५।३।३।१३ |
| एता ह वै प्राच्यै दिशो न | २।१।२।३ |
| एते उक्त्वा । यदग्निगोः | १३।५।२।१ |
| एते उद्धृत्य । मा नो | १३।५।१।१८ |
| एते एव पूर्वे अहनी | १३।५।४।३ |
| एते एव पूर्वे अहनी | १३।५।४।४ |
| एते एव पूर्वे अहनी | १३।५।४।५ |
| एते एव पूर्वे अहनी | १३।५।४।६ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|
| एते एव पूर्वे अहनी | १३।५।४।७ |
| एते खलु वा एतस्य | १२।८।२।७ |
| एतेन वै देवाः । उपांशुया० | १।६।३।२८ |
| एतेन वै देवाः । यज्ञेनेष्ट्वा | २।५।४।११ |
| एतेन वै देवाः । यज्ञेनेष्ट्वो० | २।४।३।११ |
| एतेन वै देवाः । वीर्येणाग्नि० | १२।२।२।८ |
| एतेन वै प्रजापतिः । यज्ञेनेष्ट्वा | २।५।१।२२ |
| एतेन ह स्म वा ऋषयः | २।३।४।२३ |
| एते वै ते पशवः । यांस्त्व० | ८।२।४।१६ |
| एते वै ते हेतयश्च प्रहेतयश्च | ८।६।१।२१ |
| एतेन हेन्द्रोऽतो देवापः | १३।५।४।१ |
| एतेषामेकं संवत्सरमुपेत्सेत् | २।३।२।१४ |
| एतेषु पशुषु । सिंहलोमानि | ५।५।४।१८ |
| एते ह वै रात्री । सर्वा रा० | ११।१।७।४ |
| एतौ पशुबन्धौ । तदेतावेव | ५।५।२।१० |
| एघोऽस्येधिषीमहीति | १२।९।२।१० |
| एवं वा एते भवन्ति | ४।६।४।३ |
| एवं वाव सर्वे यज्ञाः | १०।२।६।१३ |
| एवमेव माध्यन्दिने सवने | ४।२।३।५ |
| एवमेवैतद्धविर्धाने परिश्रय० | ४।६।७।१० |
| एवश्छन्द इति । अयं वै | ८।५।२।३ |
| एष उ एव प्राणः । एष | १०।५।२।१४ |
| एष उ एव बृहस्पतिः | १४।४।१।२२ |
| एष उ एव ब्रह्मणस्पतिः | १४।४।१।२३ |
| एष उ एव साम । वाग्वै | १४।४।१।२४ |
| एष उ एवान्तकः । एष हि | १०।४।३।२ |
| एष उ वा उद्गीथः । प्राणो | १४।४।१।२५ |
| एष उ वै प्राणः । तं वै | २।१।४।२० |
| एष उ वै प्राणः । ते वै | २।१।४।२२ |

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० | कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|---|---|
| एष वा अतिव्याधी नाम यज्ञ. | १३।३।७।९ | एष वै प्रभूर्नाम यज्ञः | १३।३।७।१ |
| एष वा इदं सर्वम्पचति | १०।४।२।१९ | एष वै ब्रह्मवर्चसी नाम | १३।३।७।८ |
| एष वा ऊर्जस्वान्नाम यज्ञः | १३।३।७।६ | एष वै मृत्युर्यत्संवत्सरः | १०।४।३।१ |
| एष वै वल्क्षिर्नामयज्ञः | १३।३।७।११ | एष वै विधृतिर्नाम यज्ञः | १३।३।७।४ |
| एष वै महः । य एष तपति | ४।६।५।१ | एष वै विभूर्नाम यज्ञः | १३।३।७।२ |
| एष वै दीर्घो नाम यज्ञः | १३।३।७।१० | एष वै व्यष्टिर्नाम यज्ञः | १३।३।७।३ |
| एष वै पयस्वान्नाम यज्ञः | १३।३।७।७ | एष वै व्यावृत्तिर्नाम यज्ञः | १३।३।७।५ |
| एष वै पूर्णमाः । य एष | ११।२।४।१ | एष वै स यज्ञः । येन | १।७।३।२२ |
| एष वै पजापतिः । य एष | ४।२।४।१६ | एष वै सविता य एष | ४।४।१।३ |
| एष वै प्रजापतिः । य एष | ४।५।५।१ | एष स्य राथ्यो वृषेति | १३।२।७।५ |
| एष वै प्रजापतिः । य एष | ४।५।६।१ | एषां वै भूतानाम्पृथिवी | १४।९।४।१ |
| एष प्रजापतिर्यद्धृदयम् | १४।८।४।१ | एषात्रापीतिः । अप्यहैवग्नि० | १०।१।१।९ |
| एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञः | १३।३।७।१२ | एषा वा आशीः । जीवेयं | १।८।१।३६ |

एषो अत्रापीतिः । न ह १०।१।१।१०

## ( ऐ )

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० | कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|---|---|
| ऐकादशिनाः सुत्यासु पशवो | १३।६।१।५ | ऐन्द्राग्नस्य वपायां हुतायाम् | १३।५।३।२ |
| ऐकादशिनैः संस्थापयति | १३।६।२।१५ | ऐन्द्राग्नीभिरुपतिष्ठते | ९।५।२।१० |
| ऐक्षव्यौ विधृती । नेद्बर्हिश्च | ३।४।१।१८ | ऐन्द्रावैष्णवं द्वादशकपालं | ५।५।५।१ |
| ऐन्द्रं यजमानो भक्षयति | १२।८ २।२४ | ऐन्द्रीभ्यामाहवनीयमुपति० | २।६।१।३८ |
| ऐन्द्रः प्राणः । अङ्गे अङ्गे | ३।८।३।३७ | ऐन्द्रयाम इत्याह्वायति | १२।८।३।२५ |

## ( ओ )

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० | कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|---|---|
| *ओजस्विपव इति । य एव* | *८।४।१।२०* | *ओ श्रावयेदिति वै देवाः* | *१।५।२।१८* |

ओषधयः प्रतिगृभ्णीत ६।४।४।१७

## ( औ )

| कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० | कण्डिकाप्रतीकम् | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|---|---|
| औदुम्बरं भवति । ऊर्ग्वै | ७।२।२।३ | औदुम्बरीमुपसंस्पृश्य वाचं | ४।६।९।२१ |
| औदुम्बरं भवति । तेन | ५।३।५।१२ | औदुम्बरी भवति । अन्नं वा | ३।३।४।२७ |
| औदुम्बरीं शाखामुपगूह० | ५।४।३।२५ | औदुम्बरी भवति । अन्नं वा | ५।२।१।२३ |
| औदुम्बरीमन्वारभ्यासते | ४।६।९।२२ | औदुम्बरी भवति । ऊर्वा | १२।८।३।५ |

## ( क )



* इतः पूर्वं 'प्रतीकम्' इति पाठः प्रमादात्पतितः तत्र 'प्रतीकः' इति विभावयन्तु संशोधकाः, 'प्रतिरूपे प्रतीकस्त्रि रेकदेशे तु पुंस्ययम्' इत्यभियुक्तोक्तेः ।

| कण्डिकाप्रतीकः | का०प्र०ब्रा०क० |
|---|---|
| का स्विदासीत्पूर्वचित्तिरिति | १३।२।६।१४ |
| का स्विदासीत्पिलिप्पिलेति | १३।२।६।१६ |
| का स्विदासीत्पिशङ्गिलेति | १३।२।६।१७ |
| किं नु तत्राध्वर्योः। यद्ब्रा० | ४।५।९।१३ |
| किं स्विद्धिमस्य भेषजमिति | १३।२।६।१२ |
| किं स्विदासीद्बृहद्वय इति | १३।२।६।१५ |
| किं हुत्वा प्रकम्पयसि | ११।५।३।४ |
| किञ्छन्दः। का देवता ग्रीवा | १०।३।२।२ |
| किञ्छन्दः। का देवतानूक० | १०।३।२।३ |
| किञ्छन्दः। का देवता पक्षा० | १०।३।२।४ |
| किञ्छन्दः। का देवता प्र० | १०।३।२।११ |
| किञ्छन्दः। का देवता प्रा० | १०।३।२।१२ |
| किञ्छन्दः। का देवता मध्य० | १०।३।२।५ |
| किञ्छन्दः। का देवता यस्मा० | १०।३।२।७ |
| किञ्छन्दः। का देवता यो० | १०।३।२।८ |
| किञ्छन्दः। का देवतोना० | १०।३।२।१३ |
| किञ्छन्दः। का देवतोरू | १०।३।२।९ |
| किञ्छन्दः। का देवता श्रोणी | १०।३।२।६ |
| किञ्छन्दः। का देवताष्ठी० | १०।३।२।१० |
| किन्देवतोऽस्यान्दक्षिणा० | १४।६।९।२२ |
| किन्देवतोऽस्यान्ध्रुवायां | १४।६।९।२५ |
| किन्देवतोऽस्यामुदीच्या० | १४।६।९।२४ |
| किन्देवतोऽस्याम्प्रतीच्या० | १४।६।९।२३ |
| किन्देवतोऽस्याम्प्राच्या० | १४।६।९।२१ |
| किम्वावपनमहदिति | १३।२।६।१३ |

| कण्डिकाप्रतीकः | का०प्र०ब्रा०क० |
|---|---|
| कुलायिनी घृतवती पुरन्धिरि० | ८।२।१।५ |
| कुलायिनी घृतवती पुरन्धि० | ८।२ १।१५ |
| कुविदङ्ग यवमन्तो यव० | १२।७।३।१३ |
| कुश्रिर्ह वाजश्रवसोऽग्निञ्चि० | १०।५।५।१ |
| कूर्ममुपदधाति। रसो वै कूर्मो | ७।५।१।१ |
| कृतानुकर एव प्रतिप्रस्थाता | २।५।२।३४ |
| कृत्तिकास्वग्नी आदधीत। एता | २।१।२।१ |
| कृत्वा यवान्वपति। अपम्मे | १३।८।३।१३ |
| कृष्णग्रीवमाग्नेयं रराटे पुर० | १३।२।२।३ |
| कृष्णाजिने निष्पूतो भवति | ६।७।१।६ |
| कृष्णाजिनेऽभिपिञ्चति | १२।८।३।३ |
| कृष्णाजिने सम्भरति | १४।१।२।२ |
| केवलबर्हिः प्रथमं हविर्भि० | २।२।१।१६ |
| केशवस्य पुरुषस्य। लोहायस० | ५।४।१।१ |
| केशिगृहपतीनामु ह | ११।८।४।१ |
| कौरुपाञ्चालो वा अयम्ब्रह्मा | ११।४।१।२ |
| कौशिक ब्राह्मण गौतम ब्रुवा० | ३।३।४।१९ |
| क्रतुरेकत्रिंश इति। य एवैक० | ८।४।१।२१ |
| क्रतूदक्षौ ह वा अस्य मित्रा० | ४।१।४।१ |
| क्षत्रं वय इति। प्रजापतिर्वै | ८।२।३।११ |
| क्षत्रं वा इन्द्राग्नी। विशो | २।४।३।६ |
| क्षत्रं वै पयोग्रहाः। विट् | १२।७।३।१५ |
| क्षत्रमुपांशुयाजः। स यो | ११।२।७।१५ |
| क्षत्रम्। प्राणो वै क्षत्रं | १४।८।१४।४ |
| क्षीरौदनमांसौदनाभ्यां | ११।५।७।९ |

## ( ख )

| | |
|---|---|
| खदिरेण ह सोममाचखाद | ३।६।२।१२ |

## ( ग )



## ( घ )

## ( च )

## ( छ )



## ( ज )



## ( त )

| कण्डिकाप्रतीकः | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|
| तदाहुः । यदिमा आप | ७।५।२।४२ |
| तदाहुः । यदुत्तमान्प्रयाजा० | १।६।१।९ |
| तदाहुः । यदुभे दिवा वा | १३।२।१।७ |
| तदाहुः । यदुभौ दिवा | १३।१।५।४ |
| तदाहुः । यदुभौ ब्राह्मणौ | १३।१।५।२ |
| तदाहुः । यदृचा होत्रं | ११।५।८।७ |
| तदाहुः । यदेतत्त्रयं सह | ८।१।३।४ |
| तदाहुः । यदेतत्साम | १२।८।३,२७ |
| तदाहुः । यदेतस्य दीर्घ० | १२।४।१।२ |
| तदाहुः । यदेतानि सर्वाणि | १०।१।२।६ |
| तदाहुः । यदेव प्रायणीये | ३।२।३।२१ |
| तदाहुः । यदेवमेकैकोऽथ | ६।१।२।३० |
| तदाहुः । यदेष दीर्घस० | १२।५।१।१ |
| तदाहुः । यदेष दीर्घस० | १२।५।१।१३ |
| तदाहुः । यद्ग्रहाय गृहीताय | ८।१।३।३ |
| तदाहुः । यद्ग्रावभिः | १२।८।२।१४ |
| तदाहुः । यद्ब्रह्मविद्यया | १४।४।२।२० |
| तदाहुः । यद्द्वादश मासाः | १२।२।३।६ |
| तदाहुः । यद्द्वादशोऽग्निः | १३।३।३।९ |
| तदाहुः । यद्यज्ञमुखे यज्ञमुखे | १३।१।३।८ |
| तदाहुः । यद्यथा पितुः पुत्रमे० | ८।१।३।५ |
| तदाहुः । यद्यावत्य एतस्या० | ६।२।२।२९ |
| तदाहुः । यद्योनिः परिश्रि० | ७।३।१।११ |
| तदाहुः । यद्रेतः सिक्ता | ७।३।१।३६ |
| तदाहुः । यद्वानस्पत्यैर्दे० | १४।२।२।५३ |
| तदाहुः । यन्न पूर्णमासायेति | ११।२।४।८ |
| तदाहुः । यन्नर्चा न साम्ना | २।१।४।१० |
| तदाहुः । यन्मिता छुह० | १३।१।३।२ |
| तदाहुः । यल्लोकम्पृणान्ता | ८।५।४।८ |
| तदाहुः । यस्मा एतदाप्या० | ३।४।३।१२ |
| तदाहुः । यस्य गार्हपत्योऽनु० | १२।४।३।३ |
| तदाहुः । यस्य वैद्युतो | १२।४।४।४ |
| तदाहुः । यस्याग्नयः संसृ० | १२।४।४।२ |
| तदाहुः । यस्याग्नयोऽगेध्यै० | १२।४।४।५ |
| तदाहुः । यस्याग्नावग्निमभ्यु० | १२।४।३।४ |
| तदाहुः । यस्याग्निहोत्रं | १२।४।२।६ |
| तदाहुः । यस्याग्निहोत्रं | १२।४।२।९ |
| तदाहुः । यस्याग्निहोत्रं | १२।४।२।१० |
| तदाहुः । यस्याग्निहोत्रन्दो० | १२।४।१।६ |
| तदाहुः । यस्याग्निहोत्रन्दो० | १२।४।२।२ |
| तदाहुः । यस्याग्निहोत्रन्दो० | १२।४।२।३ |
| तदाहुः । यस्याग्निहोत्रम० | १२।४।२।४ |
| तदाहुः । यस्याग्निहोत्री | १२।४।१।९ |
| तदाहुः । यस्याग्निहोत्री | १२।४।१।१२ |
| तदाहुः । यस्याग्निहोत्री | १२।४।२।१ |
| तदाहुः । यस्याहवनीय | १२।४।३।२ |
| तदाहुः । यस्याहवनीयमनु० | १२।४।४।६ |
| तदाहुः । यस्याहवनीयमनु० | १२।४।४।७ |
| तदाहुः । यस्याहवनीयेऽन० | १२।४।३।६ |
| तदाहुः । यां वै तरप्रजाप० | ७।५।२।२७ |
| तदाहुः । याजयितव्यं | १२।८।१।१७ |
| तदाहुः । विद्वेऽश्वस्यो० | ११।२।५।३ |
| तदाहुः । शश्वद्ध नैव चकमे | ४।१।४।९ |
| तदाहुः । षडेवर्तव संवत्स० | २।१।१।१३ |
| तदाहुः । समेवान्ये यज्ञास्ति० | २।३।१।१३ |
| तदाहुः । सर्वगायत्रं वैश्वदेवं | ११।५।२।९ |
| तदिडान्तं भवति । न ह्यत्र | १।९।२।१४ |
| तदिडान्तं भवति । नानुया० | ३।४।१।२६ |

| कण्डिकाप्रतीकः | का०अ०ब्रा०क० |
| --- | --- |
| तद्धैतत्पप्रच्छ । सुप्ला सा० | १२।८।२।३ |
| तद्धैतत्पश्यन्नृषिरभ्यनूवा० | १०।४।१।९ |
| तद्धैतत्पश्यन्नृषिर्वामदेवः | १४।४।२।२२ |
| तद्धैतदन्येऽध्वर्यवः । राजन्यं | १२।८।१।६ |
| तद्धैतदन्येऽध्वर्यवः । सीसेन | १२।७।२।१२ |
| तद्धैतद्देवाः । रेतश्चर्मन्वा | १।४।५।१३ |
| तद्धोचुः । हन्तेमां प्रतिष्ठां | २।१।१।९ |
| तद्यं प्रथमं दक्षिणतो माहरं | ९।३ १।१८ |
| तद्य एव पूर्वाध्यो वर्षिष्ठ | ३।५।१।१ |
| तद्यत्किञ्च वाचा कर्तव्यम् | २।५।२।२२ |
| तद्यत्कूरीकुर्वन्ति । यदास्था० | ३।८।२।८ |
| तद्य कूरीकुर्वन्ति । यदास्था० | ३।८।२।१० |
| तद्यत्कूरीकुर्वन्ति । यदास्था० | ३।८।२।११ |
| तद्यदमृतं सोमः सः | ९।५।१।८ |
| तद्यत्तत्सत्यम् । असौ स | ६।७।१।२ |
| तद्यत्तत्सत्यम् । असौ स | १४।८।६।३ |
| तद्यत्तत्सत्यम् । आप एव | ७।४।१।६ |
| तद्यत्तत्सत्यम् । त्रयी सा | ९।५।१।१८ |
| तद्यत्पञ्चकपालः पुरोडाशो | ४।५।१।१४ |
| तद्यत्पञ्च कृत्व आनक्ति | ३।१।३।१७ |
| तद्यत्परिश्रितमुपधत्ते | १०।४।२।२० |
| तद्यत्परिश्रितमुपाधत्त | १०।४।२।२७ |
| तद्यत्पृच्छति । शृतेन प्रचर० | ३।८।३।७ |
| तद्यत्पृच्छति । शृतं वै देवानां | ३।८।३।६ |
| तद्यत्पौष्णमनु भवति । पशु० | ३।९।१।१२ |
| तद्यत्प्रतिप्रस्थाता प्रतिनिगृह्णी० | ४।३।५ ७ |
| तद्यत्प्रतिप्रस्थाता संस्रवौ | ४।३।५।२३ |
| तद्यत्रैतत्त्रिरात्रे सहस्रं ददाति | ४।५।८।१ |
| तद्यत्रैतत्प्रथमं समिद्धो भवति | २।३।२।९ |

| कण्डिकाप्रतीकः | का०अ०ब्रा०क० |
| --- | --- |
| तद्यत्रैतत्प्रवृतो होता होतृषदन | ३।८।१।१ |
| तद्यत्रैतद्द्वादशाहेन व्यूढच्छ० | ४।५।९।१ |
| तद्यत्रैनं निविध्यन्ति । तत्पुरा | ३।८।१।१६ |
| तद्यत्रैनं विशसन्ति । तत्पुर० | ३।८।१।१४ |
| तद्यत्रैनमदो मन्थन्ति । तज्जा० | २।२।१५ |
| तद्यत्सर्वरूपो भवति । सर्वं | १३।४।२।२ |
| तद्यत्सारस्वतमनु भवति | ३।९।१।९ |
| तद्यत्स्वस्य गोपूयच्छति | ५।४।३।११ |
| तद्यथा तृणजलायुका | १४।७।२।४ |
| तद्यथा नः सुसमाहितम् | १४।७।१।४२ |
| तद्यथा पेशस्कारी । पेशसो | १४।७।२।५ |
| तद्यथा महामत्स्यः । उभे | १४।७।१।१८ |
| तद्यथा योनौ रेतः सिञ्चेत् | १।७।२।१४ |
| तद्यथा योनौ रेतो दध्यात् | २।२।२।७ |
| तद्यथा राजानमायन्तम् | १४।७।१।४३ |
| तद्यथा राजानम्प्रयियास० | १४।७।१।४४ |
| तद्यथा शङ्कुभिश्चर्म विहन्या० | २।१।१।१० |
| तद्यथास्मिन्नाकाशे श्येनो | १४।७।१।१९ |
| तद्यथा ह वै । इदं रथचक्रं | ११।८।१।१ |
| तद्यथाहिनिर्ल्वयनी | १४।७।२।१० |
| तद्यथैनादः । सोमं राजानं | १।७।१।१३। |
| तद्यथैवादो बृहस्पतिः | १।७।४।१४ |
| तद्यथैवादो बृहस्पतिः | ५।१।१।१५ |
| तद्यथैवादो बृहस्पतिः | ५।१।५।१६ |
| तद्यदग्निभ्य इति । बहवो | ६।२।१।१७ |
| तद्यदग्निभ्य इति । बहवो | ७।३।२।७ |
| तद्यदसृज्यताक्षरत् । तद्द० | ६।१।३ ६ |
| तद्यदाजिं धावन्ति । इममेव | ५।१।५।१ |
| तद्यदाज्यलिप्ताभ्यां पवित्रा० | १।३।१।२५ |

| कण्डिकाप्रतीक | का०अ०ब्रा०क० | कण्डिकाप्रतीक | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|---|---|
| तस्मादेतदृषिणाभ्यनूक्तम् | २।५।१।४ | तस्य चक्षुर्वैश्वव्यचसमिति | ८।१।२।२ |
| तस्मादेतदृषिणाभ्यनूक्तम् | ३।४।२।७ | तस्य तपस्तेपानस्य । एभ्यो | १०।४।४।२ |
| तस्मादेतदृषिणाभ्यनूक्तम् | ४।१।३।१७ | तस्य ते पवित्रपत इति | ३।१।३।२२ |
| तस्मादेतदृषिणाभ्यनूक्तम् | ४।५।३।३ | तस्य त्रयोविंशतिर्दीक्षा | १३।६।१।२ |
| तस्मादेतदृषिणाभ्यनूक्तम् | १०।२।२।२ | तस्य त्रिवृद्बहिष्पवमानम् | १३।५।३।१० |
| तस्मादेतदृषिणाभ्यनूक्तम् | १०।५।३।२ | तस्य देवा । यावन्मात्रमिव | ४।१।३।८ |
| तस्मादेतदृषिणाभ्यनूक्तम् | ११।१।६।१० | तस्य द्वादश प्रथमगर्भा | ४।६।१।११ |
| तस्मादेतदृषिणाभ्यनूक्तम् | १२।७।३।४ | तस्य द्वादश प्रथमगर्भा | ५।४।५।२० |
| तस्मादेतदृषिणाभ्यनूक्तम् | १४।१।१।२५ | तस्य नपुंसको गौर्दक्षिणा | ५।५।४।३५ |
| तस्मादेवविरस्वप्यात् | १०।५।२।१२ | तस्य परस्तादेवाभिऽस्पृश | ४।६।९।६ |
| तस्माद्दीक्षिता राजान गोपा० | ३।६।२।१४ | तस्य परिचक्षा । यस्यै वै | २।४।३।९ |
| तस्माद् ब्रह्मचारिण आचार्य | ३।६।२।१५ | तस्य पुराणोऽनड्वान्दक्षि० | १३।८।४।१० |
| तस्माद्यदि यूपैकादशिनी | ३।९।१।२२ | तस्य प्रथमजो गौर्दक्षिणा | २।४।३।१३ |
| तस्माद्यधर्धर्चश शंसेत् | ४।३।२।६ | तस्य प्रयाजा एव प्रात स० | ११।७।२।३ |
| तस्मान्निवृद्दक्षिणा न | ३।५।१।२५ | तस्य प्रविवाहनोऽध्वरयो | ५।२।४।९ |
| तस्मान्मध्यमाच्छङ्को । उदङ् | ३।५।१।३ | तस्य प्राणो भौवायन इति | ८।१।१।५ |
| तस्मान्मध्यमाच्छङ्को । उदङ् | ३।५।१।६ | तस्य प्रात सवनम् । अग्नि० | १३।५।१।८ |
| तस्मान्मध्यमाच्छङ्को । दक्षि० | ३।५।१।२ | तस्य मन एव प्रतिष्ठा | ६।७।१।२१ |
| तस्मान्मध्यमाच्छङ्को । दक्षि० | ३।५।१।५ | तस्य मनो वैश्वकर्मणमिति | ८।१।१।८ |
| तस्मान्मध्यमाच्छङ्को । प्राङ् | ३।५।१।८ | तस्य यदधर कपालम् | ७।५।१।२ |
| तस्मिन्छुक्रमुत नीलमाहु | १४।७।२।१२ | तस्य यन्निखातम् । तेन पितृ० | ३।७।१।२५ |
| तस्मिन्नशाविष्टका उपदधाति | ९।४।३।६ | तस्य यानि शुक्लानि च | १।१।४।२ |
| तस्मिन्वाचयति । नमो | ३।३।४।२४ | तस्य यो योनिराशय आस | ५।५।५।६ |
| तस्मै क पुनारा बेयमादधीत | २।२।३।५ | तस्य रथन्तर पृष्ठ भवति | ५।५।३।५ |
| तस्मै कमानी उपतिष्ठेत | २।३।४।३ | तस्य रुक्मः पुरस्ताद्भवति | ३।५।१।२० |
| तस्मै कर्मैकादशिन्या यत्नेव | ३।९।१।५ | तस्य लोमान्येव शष्पाणि | १२।९।१।२ |
| तस्मै तावन्मात्रीर्मा भूयसीर्वा | ५।४।३।१२ | तस्य वा एतस्य ग्रहस्य | ४।१।१।२६ |
| तस्मै ह स्म पूर्वाह्णे देवा | १।६।३।१२ | तस्य वा एतस्य ज्योतिष्टो० | १०।१।२।७ |
| तस्य गार्हपत्य एवाय | ७।१।२।१२ | तस्य वा एतस्य पशो | ९।५।१।४१ |

| कण्डिकाप्रतीकः | का०अ०प्रा०क० |
|---|---|
| तस्य वा एतस्य पुरुषस्य | १४।६।११।५ |
| तस्य वा एतस्य पुरुषस्य | १४।७।१।९ |
| तस्य वा एतस्य ब्रह्मयज्ञस्य | ११।५।६।९ |
| तस्य वा एतस्य यजुषः | १०।३।५।१२ |
| तस्य वा एतस्य वाससः | ३।१।२।१८ |
| तस्य वा एतस्य संवत्सरस्य | १०।४।२।२ |
| तस्य वा एतस्याग्निहोत्रस्यो० | १२।५।१।६ |
| तस्य वा एतस्याग्नेः। वागे० | १०।५।१।१ |
| तस्य वा एतस्याग्न्याधेयस्य | २ २।२।१९ |
| तस्य वा एतस्यानसः। अग्नि० | १।१।२।९ |
| तस्य विधा चतुर्विंशाः | १३।५।४।२० |
| तस्य विराजौ संयाज्ये | २।२।१।२० |
| तस्य शिर एवाहवनीयः | ७।१।२।१३ |
| तस्य शिरो गायत्र्यः। आत्मा | ८।६।२।३ |
| तस्य शिरो गायत्र्यः। ता यद्गा० | ८।६।२।६ |
| तस्य शिरो निदधति | ४।६।८।४ |
| तस्य शिरो निदधति | ४।६।८।९ |
| तस्य शिरो निदधति | ४।६।८।१४ |
| तस्य श्रौत्रं सौवमिति | ८।१।२।५ |
| तस्य सप्तदश सामिधेन्यः | ६।२।२।८ |
| तस्य सप्तदश सामिधेन्यो | ३।१।३।६ |
| तस्य सर्पिरासेचनं कृत्वा | २।१।४।५ |
| तस्य सोमपानमेवैकं मुखमास | १।६।३।२ |
| तस्य सोमपानमेवैकं मुखमास | ५।५।४।३ |
| तस्य ह प्रजापतेः। अर्धं० | १०।१।३।२ |
| तस्य ह यो निरुक्तमावि० | १०।३।५।१६ |
| तस्य हिरण्यं दक्षिणा | २।२।३।२८ |
| तस्य हिरण्यं दक्षिणा | ४।५।१।१५ |
| तस्य हैके। अग्निष्टोमसाम | १३।५।१।२ |

| कण्डिकाप्रतीकः | का०अ०प्रा०क० |
|---|---|
| तस्य हैतस्य पुरुषस्य | १४।५।३।१० |
| तस्य हैतस्य साम्नो यः | १४।४।१।२७ |
| तस्य हैतस्य साम्नो यः | १४।४।१।२८ |
| तस्य हैतस्य साम्नो यः | १४।४।१।२९ |
| तस्य हैतस्य। हृदयस्याग्र० | १४।७।२।३ |
| तस्या पवित्रं करोति। वसोः | १।७।१।९ |
| तस्यां मिथुनमस्ति। योषा | २।५।१।१६ |
| तस्या अग्निरन्नाद्यमादत्त | ११।४।३।३ |
| तस्या अग्निरेव मुखम् | १४।८।१५।१२ |
| तस्या अस्त्येवाग्नेयम् | १०।१।३।९ |
| तस्या आवृत्। यत्र होता | ५।१।३।४ |
| तस्या उपस्थानम् | १४।८।१५।१० |
| तस्या एतस्या अपाढां | ६।५।३।१ |
| तस्याक्षिभ्यामेव तेजोऽस्रवत् | १२।७।१।२ |
| तस्याग्निरेवाग्निर्भवति | १४।९।१।१७ |
| तस्याग्निष्टुदग्निष्टोमः प्रथम० | १३।७।१।३ |
| तस्याग्निष्टोमः प्रथममहर्भव० | १३।६।१।८ |
| तस्याप एव प्रतिष्ठा | ६।७।१।१७ |
| तस्यामाधारयति। सिंहासि | ३।५।२।११ |
| तस्यायमेव लोकः प्रतिष्ठा | ७।१।२।७ |
| तस्यायमेव लोकः प्रथम० | १३।६।१।१० |
| तस्यायमेव लोको गार्हपत्यः | १२।४।१।३ |
| तस्यावाङ् मेघः पपात | ३।८।३।१२ |
| तस्यावृत्। उपकिरन्त्युत्तर० | २।५।४।२ |
| तस्यावृत्। नोपकिरन्त्युत्तर० | २।६।३।३ |
| तस्यावृत्। या स्वयम्प्रशीर्णा० | ५।३।२।५ |
| तस्यावृत्। सैव स्तीर्णा | २।५।३।५ |
| तस्या वेदिरुपस्थः। लोमानि | १४।९।४।३ |
| तस्याश्च श्वेतो दक्षिणा | २।६।३।९ |

| कण्डिकाप्रतीकः | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|
| तेनेन्द्रोऽयजत । स इदं | ५।१।१।६ |
| तैनैतेनान्तरतश्च बाह्यतश्च | ६।५।२।७ |
| तेनो अर्वन्तः । हवनश्रुतो | ५।१।५।२३ |
| तेनोपांशु चरन्ति । तिर इव | १।९।२।८ |
| तेनोपांशु चरन्ति । तिर इव | २।६।१।१९ |
| तेनोपांशु चरन्ति । यद्वै | २।२।३।१६ |
| तेनो ह तत ईजे । दक्षः पार्व० | २।४।४।६ |
| तेनो ह तत ईजे । देवभाग | २।४।४।५ |
| तेनो ह तत ईजे । प्रति० | २।४।४।३ |
| तेऽन्यमेव प्रति प्रजिघ्युः | ३।५।१।१६ |
| तेऽपराह्ण उपसमेत्य । अप | ४।६।९।८ |
| ते पुनरनु संस्पर्शयन्ति | १।८।२।२ |
| ते पुरुषमाविशतः । तस्य | ११।६।२।९ |
| ते प्रजापतिं प्रतिप्रश्नमेयतुः | १।४।५।११ |
| ते प्रजापतिमब्रुवन् । अस्माद्वै | ९।१।१।७ |
| ते प्रजापतिमब्रुवन् । हनामे० | ११।४।३।२ |
| ते प्रयन्ति । अग्निं पुरीष्य० | ६।३।३।३ |
| ते प्राच्या उपदधाति | ८।६।२।१५ |
| ते प्राञ्चं विष्णुं निपाद्य | १।२।५।६ |
| ते प्राञ्च उपनिष्क्रामन्ति | ४।६।९।१० |
| ते प्राञ्च उपनिष्क्रामन्ति | ४।६।९।१५ |
| ते प्राञ्चस्तिष्ठन्ति । अश्वः | ६।३।१।२८ |
| ते प्रातःसवन एव । सर्वं | ४।१।१।७ |
| ते प्रक्षाब्रुवन् । त्वामिहोपद० | ८।४।१।३ |
| तेऽब्रुवन् । अग्नयः स्विष्ट० | १३।३।४।२ |
| तेऽब्रुवन् । अन्नमस्मै सम्भराम | ९।१।१।२ |
| तेऽब्रुवन् । अन्नं वा अयं | ७।१।२।४ |
| तेऽब्रुवन् । अश्विनौ वा | ८।२।२।३ |
| तेऽब्रुवन् । अस्तु नोत्राप्य० | १२।७।३।२ |

| कण्डिकाप्रतीक | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|
| तेऽब्रुवन् । उप तज्जानीत | ७।२।१।२ |
| तेऽब्रुवन् । उप तज्जानीत | ७।४।१।२३ |
| तेऽब्रुवन् । उप तज्जानीत | ८।६।३।२ |
| तेऽब्रुवन् । उप तज्जानीत | ८।६।३।९ |
| तेऽब्रुवन् । उप तज्जानीत | ८।७।४।२ |
| तेऽब्रुवन् । उप वयमायामेति | ६।२।३।८ |
| तेऽब्रुवन् । चेतयध्वमिति | ८।२।१।२ |
| तेऽब्रुवन् । चेतयध्वमिति | ८।३।१।२ |
| तेऽब्रुवन् । चेतयध्वमिति | ८।४।१।२ |
| तेऽब्रुवन् । चेतयध्वमिति | ८।५।१।२ |
| तेऽब्रुवन् । चेतयध्वमेवेति | ६।२।३।५ |
| तेऽब्रुवन् । चेतयध्वमेवेति | ६।३।३।१६ |
| तेऽब्रुवन् । चेतयध्वमेवेति | ६।२।३।३ |
| तेऽब्रुवन् । न वा इत्थं सन्तः | ६।१।१।३ |
| तेऽब्रुवन् । न वा इत्थं सन्तः | ८।७।१।४ |
| तेऽब्रुवन् । मध्य एवोपदधा० | ८।६।३।४ |
| तेऽब्रुवन् । यद्यह सर्वैरन्वे० | ६।३।१।२३ |
| तेभ्यो गायत्री सोममच्छाप० | ३।२।४।२ |
| तेभ्यो दश प्राचीः | ९।१।१।२८ |
| तेभ्योऽध्वर्युश्चातुष्प्राश्यमन्न० | १३।४।१।५ |
| तेभ्यो वाचं दक्षिणामानयन् | ३।५।१।१८ |
| तेभ्यो ह वाक्चुक्रोध | ३।५।१।२१ |
| ते माहेन्द्रस्यैवानुहोमं हूयन्ते | ४।५।४।८ |
| ते मौञ्जीगिरभिधानीभि० | ६।३।१।२६ |
| ते य एवमेतद्विदुः । ये चामी | १४।९।१।१८ |
| ते य एवमेतद्विदुः । ये चे० | १०।४।३।१० |
| ते यथाधिष्ण्यमेवोपविशन्ति | ४।६।९।१६ |
| ते यदब्रुवन् । चेतयध्वमिति | ६।२।३।९ |
| ते यदब्रुवन् । चेतयध्वमिति | ६।३।१।२ |

| कण्डिकाप्रतीकः | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|
| ते होचु । हन्तेमा पृथिवीं | १।२।५।२ |
| तैरुपाश्चचरन् । आप्याय० | ४।६।७।१७ |
| तैर्यत्र प्रचरन्ति । आग्नेये० | ३।९।१।२७ |
| तौ जघनेन यूपमरत्नी | ४।२।१।१९ |
| तौ जघनेनाहवनीयमरत्नी | ४।२।१।१५ |
| तौ प्रजापतिं प्रतिप्रश्नमेय० | ४।१।३।१४ |
| तौ यौ साविन्द्राग्नी । एतौ | १०।४।१।६ |
| तौ वा ऋतुनेति पट् प्रचर्य | ४।३।१।१३ |
| तौ वा ऋतुनेत्युपरिष्टाद् | ४।३।१।११ |
| तौ वा ऋतुनेति पट् प्रचरत | ४।३।१।१० |
| तौ वै पुरस्तात्तिष्ठन्तौ | ४।२।१।२४ |
| तौ वै वषट्कृत्वौ सन्तौ | ४।२।४।२६ |
| तौ हृदयस्याकाशम्प्रत्य० | १०।५।२।११ |
| तौ हैत्योचतु । उपत्वा० | १४।१।१।२१ |
| तौ होचतुः । आवान्त्वा | १४।१।१।२३ |
| तौ होचतुः । उपनौ ह्वय० | ४।१।५।१४ |
| तौ होचतु । एतं हृदम० | ४।१।५।१२ |
| तौ होचतु । किमावयो० | १।६।३।१४ |
| तौ होचतुः । किमावयो० | १।६।३।१९ |
| तौ होचतुः । मुख्यो वा | ४।१।५।१६ |
| तौ होचतु । श्रद्धादेवो वै | १।१।४।१५ |
| तौ होचतु । शिशीर्णा वै | ४।१।५।१५ |
| तौ होचतुः । सुकन्ये कमिम | ४।१।५।९ |
| तौ होचतु । सुकन्ये केना० | ४।१।५।१३ |
| तौ होपनिन्ये । तौ यदो० | १४।१।१।२४ |
| त्रयं वा इदन्नाम रूपङ्कर्म | १४।४।४।१ |
| त्रय पशवो भवन्ति | १२।८।१।३२ |
| त्रयः पशवो भवन्ति | १२।१।१।१७ |
| त्रय पुरोडशा भवन्ति | १२।८।२।३३ |

| कण्डिकाप्रतीकः | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|
| त्रय पुरोडशा भवन्ति | १२।९।१।८ |
| त्रयः सारस्वतम् । होता | १२।८।२।२७ |
| त्रय आश्विनम्भक्षयन्ति | १२।८।२।२६ |
| त्रयस्त्रिंशतास्तुवतेति | ८।४।३।१९ |
| त्रयस्त्रिंशन्नवममहर्भवति | १३।७।१।११ |
| त्रयस्त्रिंशस्तोमेन । शोण | १३।५।४।१६ |
| त्रयाः प्राजापत्या । प्रजा० | १४।८।२।१ |
| त्रया देवा एकादशेति | १२।८।३।२८ |
| त्रया वै देवा वसवो रुद्रा | ४।३।५।१ |
| त्रयी वै विद्या । ऋचो यजूंषि | ४।६।७।१ |
| त्रयोदश यजमानो भक्ष० | १२।८।२।३१ |
| त्रयोदश भवन्ति । त्रयोदश | १३।८।३।७ |
| त्रयोदशभिरस्तुवतेति | ८।४।३।९ |
| त्रयोदश सम्पादयति | १४।१।३।२८ |
| त्रयोदशारत्नि परिवासयेत् | ३।६।४।२४ |
| त्रयोदशैता अ हुतयो | १४।३।१।१६ |
| त्रयोदशैतानि नामानि | ९।३।३।९ |
| त्रयोदशैता व्याहृतयो भवन्ति | ७।२।३।९ |
| त्रयोऽनुयाजाः । इम एवास्य | ११।२।६।९ |
| त्रयो ममेति तृतीये प्रयाजे | १।५।४।१४ |
| त्रयो ममेतीन्द्रोऽब्रवीत् | १।५।४।९ |
| त्रयो लोका एत एव | १४।४।३।११ |
| त्रयोविंशत्यास्तुवतेति | ८।४।३।१४ |
| त्रयो वेदा एत एव | १४।४।३।१२ |
| त्रयो ह त्वाव पशवोऽमेध्या | १२।४।१।४ |
| त्रयो ह वै समुद्राः । अग्नि० | ९।५।२।१२ |
| त्रय्यः सूच्यो भवन्ति | १३।२।१०।३ |
| त्रिंशतमौदुम्बराणि जुहोति | १३।१।७।४ |
| त्रिः सामाभिगायति | ५।१।५।४ |

# ( द )

| कण्डिकाप्रतीक | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|
| दक्षिणत आहवनीयो भवति | ६।३।१।३० |
| दक्षिणत उ हैक उपदधति | ८।४।४।११ |
| दक्षिणाप्रवणस्य प्रत्यर्पे | १३।८।१।८ |
| दक्षिणाप्रवणे कुर्यादित्याहु | १३।८।१।७ |
| दक्षिणामारोह । त्रिष्टुप्त्वा० | ५।४।१।४ |
| दक्षिणामेव दिशम् । सोमेन | ३।२।३।१७ |
| दक्षिणार्धे हैक सादयन्ति | ४।१।१।२७ |
| दक्षिणेऽग्नौ सुराग्रहान्तु० | १२।९।३।१२ |
| दक्षिणेऽग्नौ सुराग्रहान्तु० | १२।९।३।१५ |
| दक्षिणेनाहवनीय प्राचीन० | ३।२।१।१ |
| दण्डन्दक्षिणान्ददाति | ११।१।५।११ |
| दध्यङ् ह वा आथर्वण | १४।१।१।१८ |
| दध्यङ् ह वा आभ्यामाथर्व० | ४।१।५।१८ |
| दर्भमयी रशना भवति | १३।१।१।२ |
| दर्शपूर्णमासौ वै प्रवर्ग्य | १४।३।२।२७ |
| दशकपालो वारुणो भवति | १२।७।२।२० |
| दश ग्राम्याणि धान्यानि | १४।९।३।२२ |
| दश च वै सहस्राण्यष्टौ च | १२।३।२।५ |
| दशात्मनोऽनुरून । ह्रास० | १०।४।२।११ |
| दशेति होत च । दश वा | १२।८।२।२४ |
| दशैतानध्वतान न्नुगेति | ९।२।१।३१ |
| दिक्ष्वुपदधाति । दिशो वै | ८।६।१।४ |
| दिग्भ्यः स्व हेति । दिशो | १४।३।२।१० |
| दिग्यवाड् रय इति । दिग्यवाट् | ८।२।४।१२ |
| दिनश्चनमादित्य च | १४।४।३।२८ |
| दिवस्परि प्रथम जने अग्नि० | ६।७।४।३ |
| दिवस्पृष्ठे व्यचस्वतीम्प्रथ० | ८।७।३।१८ |
| दिवा गृह्णीयात् । पश्य यन० | ३।९।२।६ |

| कण्डिकाप्रतीक | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|
| दिवि वै सोम आसीत् | ३।२।४।१ |
| दिवि वै सोम आसीत् | ३।६।२।२ |
| दिवे त्वा सूर्याय त्वेति | ३।९।३।५ |
| दिवे स्वाहेति द्यौर्वै | १४।३।२।८ |
| दिव्य धामाशास्त इति | १।९।१।१६ |
| दिव्य नभो गच्छ स्वाहेति | ३।८।५।३ |
| दिशो मुग्धा आस पश्च | ३।२।३।१४ |
| दीक्षणीयाया संस्थितायाम् | १३।४।४।२ |
| दीक्षायै तपसेऽग्नये स्वाहेति | ३।१।४।८ |
| दीर्घसत्र वा एष उपैति | ११।३।३।२ |
| दीर्घसत्र ह वा एत उपयन्ति | १२।४।१।१ |
| दीर्घायुत्वमाशास्त इति | १।९।१।१३ |
| दुष्टरीतुर्ई पौंस यन | १२।९।३।१ |
| दृहस्व देवि पृथिवि स्वस्तय | ६।६।२।६ |
| दृप्तबालाकिर्हानूचानो गार्ग्य | १४।५।१।१ |
| दृशानो रुक्म उर्व्या व्यद्यौ० | ६।७।२।२ |
| देव सवितार गच्छ स्वाहेति | ३।८।४।१२ |
| देवचक्रे वा एते पृष्ठ्यप्रति० | १२।२।२।२ |
| देवत्वष्टुर्वसु रमेति । त्वष्टा | ३।७।३।११ |
| देवपात्र वा एष यद्वषट्कार | १।७।२।१३ |
| देवयजन जोषयन्ते । स यदेव | ३।१।१।१ |
| देवयुर विश्ववारामिति | १।५।२।३ |
| देवयोनिर्वा एष यदाहव० | १२।९।३।१० |
| देव सवित प्रसुव यज्ञ | ६।३।१।१० |
| देवस्य सवितुर्भागोऽसि | ८।४।२।१० |
| देवा पितरो मनुष्या एत | १४।४।३।१३ |
| देवा गातुविद इति | ४।४।४।१३ |
| देवानाम् ह स्म दीक्षितानाम् | ३।४।३।२ |

| कण्डिकाप्रतीक | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|
| देवान्यक्षद्विद्वांश्चिकित्वानिति | १।५।१।६ |
| देवान्यक्षि स्वध्वरेति | १।४।१।३९ |
| देवान्यजेत्येवाध्वर्युराह | १।८।२।१४ |
| देवान्वा ऊर्ध्वान्त्स्वर्गंल्लोक | ११।५।५।१ |
| देवान्वा एष प्रीणाति | १।०।१।३ |
| देवान्ह वा अग्नी आधा० | २।१।४।१५ |
| देवा ब्राह्मण आगच्छतेति | ३।३ ४।२० |
| देवा म इदं हविर्जुषन्तामिति | १।८।१।२७ |
| देवा वा अश्वमेधे पवमानम् | १३।२।३।१ |
| देवा वा उदञ्च । स्वर्गंल्लो० | १३।२।८।१ |
| देवाश्च वा असुरश्च । उभये | १।२।४।८ |
| देवाश्च वा असुराश्च । उभये | १।२।५।१ |
| देवाश्च वा असुराश्च । उभये | १।५।३।२ |
| देवाश्च वा असुराश्च । उभये | १।५।४।६ |
| देवाश्च वा असुराश्च । उभये | १।७।२।२२ |
| देवाश्च वा असुराश्च । उभये | १।९।२।३४ |
| देवाश्च वा असुराश्च । उभये | २।२।२।८ |
| देवाश्च वा असुराश्च । उभये | ३।४।४।२ |
| देवाश्च वा असुराश्च । उभये | ३ ५।४।२ |
| देवाश्च वा असुराश्च । उभये | ३।६।१।८ |
| देवाश्च वा असुराश्च । उभये | ४।२।४।११ |
| देवाश्च वा असुराश्च । उभये | ५।१।१।१ |
| देवाश्च वा असुराश्च । उभये | १३।१।८।१ |
| देवास्त्वा देवयज्यायै जुष० | ३।२।४।८ |
| देवा ह वा ऊचुः । हन्त | १।५।३।२१ |
| देवा ह वै यज्ञं तन्वानाः | १।१।२।३ |
| देवा ह वै यज्ञं तन्वानाः | १।३।१।५ |
| देवा ह वै यज्ञं तन्वाना | १।४।४।८ |
| देवा ह वै यज्ञं तन्वाना | ३।३।३।१६ |
| देवा ह वै यज्ञं तन्वाना | ३।५।३।१५ |
| देवा ह वै यज्ञं तन्वानाः | ३।७।२।२ |
| देवा ह वै यज्ञं तन्वानाः | ३।६।१।१ |
| देवा ह वै यज्ञं तन्वाना | ३।६।१।२७ |
| देवा ह वै यज्ञं तन्वाना | ४।१।१।६ |
| देवा ह वै यज्ञं तन्वाना | ४।२।४।१९ |
| देवा ह वै सत्रन्निषेदुः | १४।१।१।१ |
| देवा ह वै सत्रमासत । श्रिय | ४।६।९।१ |
| देवा ह वै सहस्रसंवत्सराय | १२।३।३।१ |
| देवो भूत्वा देवानप्येति | १४।६।१०।४ |
| देवो भूत्वा देवानप्येति | १४।६।१०।७ |
| देवो भूत्वा देवानप्येति | १४।६।१०।१० |
| देवो भूत्वा देवानप्येति | १४।६।१०।१३ |
| देवो भूत्वा देवानप्येति | १४।६।१०।१६ |
| देवो भूत्वा देवानप्येति | १४।६।१०।१९ |
| दैव्याय धर्त्रे जोष्ट्र इति | ९।२।३।१० |
| दोग्ध्री धेनुरिति । धेन्वामेव | १३।१।९।३ |
| द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहेति | ३।८।४।१७ |
| द्यौरेव तृतीया चितिः | ८।७।४।१४ |
| द्यौर्ह त्वेवैषोऽग्निश्चित्र | १०।५।४।३ |
| द्रप्सश्चस्कन्द पृथिवीमनु | ७।४।१।२० |
| द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः | १२।९।२।७ |
| द्रोणकलशाद् गृह्णाति । प्रजा० | ३।४।१।६ |
| द्रोणकलशे गृह्णाति । वृत्रो वै | ४।४।३।४ |
| द्वय वा अभ्युपरवाः खायन्ते | ३।५।४।१ |
| द्वयं वा इदं जीवनम् | २।३।१।१० |
| द्वयं वा इदं न तृतीयमस्ति | १।१।१।४ |
| द्वयं वा इदं न तृतीयमस्ति | १।६।३।२३ |
| द्वयं वा इदमत्ता चैवाद्यञ्च | १०।६।२।१ |

## ( ध )



## ( न )

(प)

| कण्डिकाप्रतीक | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|
| प्राणेन वा अग्निर्दीप्यते | १०।६।२।११ |
| प्राणेन वै देवा अन्नमद० | १०।१।४।१२ |
| प्राणेष्वेव हूयते । होतरि | ११।८।१।२९ |
| प्राणो गायत्री । चक्षुरुष्णि० | १०।३।१।१ |
| प्राणो गायत्रीति । तद्य एव | १०।३।१।२ |
| प्राणोदानौ ह वा अस्यैतौ | ४।१।२।११ |
| प्राणोऽपानो व्यान इति | १४।८।१५।३ |
| प्राणो वै ग्रहः सोऽपाने० | १४।६।२।२ |
| प्राणो ह वा अस्योपांशु | ४।१।१।१ |
| प्राणो ह वा अस्योपांशुः | ४।१।२।१ |
| प्रातःसवनस्यैतद्रूपम् | १२।८।२।८ |
| प्रातरादित्यमुपतिष्ठते | १४।९।३।१४ |
| प्रातराहुत्या हुतायाम् | १३।४।१।१० |
| प्रादेशमात्री भवति । प्रादे० | ६।६।२।१२ |
| प्रादेशमात्री स्यात् । प्रादे० | ६।३।१।२३ |
| प्रादेशमात्रे भवत । प्रादे० | ७।५।१।१४ |
| प्रादेशमात्र्यूर्ध्वा भवति | ६।७।१।१४ |
| प्रादेशमात्र्यो भवन्ति | ६।६।३।१७ |
| प्रायणीयोऽतिरात्र । चतु० | १२।२ १।३ |
| प्राशित्रञ्चेडा च । यथा० | ११।४।१।११ |
| प्राश्नीपुत्रात् । आसुरिवा० | १४।९।४।३३ |
| प्रेदग्ने ज्योतिष्मान्याहि | ६।८।१।९ |
| प्रोक्षणीरध्वर्युरादत्ते । स इ० | १।३।३।१ |
| प्रोक्षणीरध्वर्युरादत्ते । स इ० | २।६।१।१४ |
| प्रोक्षणीरध्वर्युरादत्ते । स इ० | ३।६।३।१४ |
| प्रोक्षणीरध्वर्युरादत्ते । स पु० | ३।५।२।४ |
| प्रोक्षणीषु पवित्रे भवतः | १।३।१।२२ |
| प्रोक्षिता स्थेति । तदेताभ्यो | १।१।३।१० |
| प्रोतिर्ह कौशाम्बेयः | १२।२।२।१३ |
| प्रोथदश्वो न यवसे | ८।७।३।१२ |

## ( फ )

फेनोऽब्रवीत् । काहं भवानीति ६।१।३।२

## ( ब )

| | |
|---|---|
| बस्तो वय इति । बस्तं | ८।२।४।१ |
| बहिर्वेदेरिय वै वेदिः । आप्ता | ७।३।१।१५ |
| बहिर्वेदेरियं वै वेदि । आप्तो | ७।३।१।१८ |
| बहिर्वेदेरिय वै वेदिः । आप्तो | ९।४।२।३ |
| बहुमिदं वै यज्ञे । एक० | १०।२।६।९ |
| बहु वा इदं सुप्तस्य वा | १४।१।४।५ |
| बार्हस्पत्येन चरुणा प्रचरति | ५।२।२।१ |
| बाल्वजीभी रज्जुभिर्युता | १४।१।३।११ |
| बाहू अस्यैते । ते नानोप० | ७।१।१।२१ |
| बाहू पञ्चदशवत्यौ । ते प्र० | ८।४।४।६ |
| बाह्येनाग्निं हरति । इमे वै | ९।१ २।११ |
| बाह्येनाग्निमाहरति । आप्ता | ७।३।१।१४ |
| बाह्येनाग्निमाहरति । आप्तो | ७।३।१।१७ |
| बाह्येनाग्निमाहरति । आप्तो | ९।४।२।२ |
| बाह्येनैनाग्निमुत्सृजेत् । इमे वै | ७।५।२।२१ |
| बाह्योक्षा भवति । अन्तरे | ६।६।२।१६ |
| बृहच्छोचा यविष्ठ्येति | १।४।१।२६ |
| बृहत्याङ्गायति । बृहत्या | १२।८।३।२४ |
| बृहदग्ने सुवीर्यमिति | १।४।१।२८ |
| बृहदुत्तरे पक्षे । द्यौर्वै | ९।१।२।३७ |

## ( य )

| कण्डिकाप्रतीकः | का०अ०ब्रा०क० |
| --- | --- |
| यजमानदेवत्यो वै गार्हपत्य. | २।३।२।६ |
| यजमानो वै प्रवर्ग्यः | १४।३।२।२५ |
| यजुः । प्राणो वै यजु | १४।८।१४।२ |
| यजुषा ह वै देवा । अग्ने | ४।६।७।१३ |
| यज्ञं वा एष जनयति | १।९।१।२ |
| यज्ञ एव चतुर्थी चितिः | ८।७।४।१५ |
| यज्ञ यज्ञं गच्छ । यज्ञपति | ४।४।४।१४ |
| यज्ञायज्ञियं पुच्छे । चन्द्रमा | ९।१।२।३९ |
| यज्ञेन वै देवा । इमां जितिं | १।६।२।१ |
| यज्ञेन वै देवा. । इमां जितिं | ३।१।४।३ |
| यज्ञेन वै देवा । इमां जितिं | ३।२।२।२ |
| यज्ञेन वै देवाः । इमां जितिं | ३।२।२।११ |
| यज्ञेन वै देवाः । इमां जितिं | ३।२।२।२८ |
| यज्ञेन वै देवा । इमां जितिं | ३।४।३।१५ |
| यज्ञेन वै देवा । इमां जितिं | ३।७।१।२७ |
| यज्ञेन वै देवाः । दिवमुपोद० | १।७।३।१ |
| यज्ञेन ह वै देवाः । इमां जितिं | १।६।२।२ |
| यज्ञो वा अन । यज्ञो हि वा | १।१।२।७ |
| यज्ञो ह देवेभ्योऽपचक्राम | १।५।२।६ |
| यत्कर्मणात्यरीरिचम् | १४।९।४।२४ |
| यत्किञ्च विजिज्ञास्यम् | १४।४।३।१६ |
| यत्किञ्चाविज्ञातम् । प्राणस्य | १४।४।३।१७ |
| यत्त्रिष्टोऽनुष्टुभो भवन्ति | १३।३।३।१ |
| यत्पयो न स्यात् । केन | ११।३।१।३ |
| यत्र त्रिष्टुभ. शस्यन्ते | ४।३।२।११ |
| यत्र त्वस्य सर्वमात्मैवाभूत् | १४।४।५।१६ |
| यत्र त्वस्य सर्वमात्मैवाभूत् | १४।७।३।२५ |
| यत्र द्यावापृथिव्यं शस्यते | ४।३।२।१२ |
| यत्र धारा अनपेताः । मधो० | ९।५।१।५० |
| यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति | १०।२।२।३ |
| यत्र वा अन्यदिव स्यात् | १४।७।३।२४ |
| यत्र वै देवाः असुररक्षसा० | ३।१।३।११ |
| यत्र वै देवा । असुररक्षसा० | ४।२।१।१ |
| यत्र वै देवाः । इमा विद्याः | ४।६।७।१४ |
| यत्र वै देवा । साकमेधैर्व्य० | ५।२।४।७ |
| यत्र वै देवा अग्ने पशुमाले० | ३।८।३।११ |
| यत्र वै प्रजापति प्रजाः ससृजे | २।३।३।१ |
| यत्र वै यज्ञस्य शिरोऽच्छिद्यत | ३।९।२।१ |
| यत्र वै यज्ञस्य शिरोऽच्छि० | ३।९।३।१२ |
| यत्र वै यज्ञस्य शिरोऽच्छि० | ३।९।३।१८ |
| यत्र हि द्वैतमिव भवति | १४।५।४।१५ |
| यत्रोदकन्भवति तस्मान्ति | १३।८।४।५ |
| यत्स दूरम्परेत्य । अथ तत्र | ११।२।१।७ |
| यत्सप्तान्नानि मेधया तपसा० | १४।४।३।१ |
| यत्सप्तान्नानि मेधया तपसा० | १४।४।३।२ |
| यथा वा इषोरनीकम् । एवं | २।३।३।१० |
| यथा वै हविषोऽहुतस्य | १३।१।३।१ |
| यथा वै हविषोऽहुतस्य | १३।१।३।५ |
| यथा वै हविषोऽहुतस्य | १३।२।६।८ |
| यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमान | १३।५।१।१७ |
| यदमिषधान्यक्रन्दयन्ति | १३।२।१०।१ |
| यदहरस्य श्वोऽन्याधेयं स्यात् | २।१।४।१ |
| यदहरेवैषः । न पुरस्तान्न | ११।१।२।४ |
| यदाक्रन्त् । समसुखोद्भूतो | ९।५।१।४५ |
| यदाज्यं परिशिष्टं भवति | ३।६।४।४ |
| यदा पिष्टान्यथ लोमानि | १।२।३।८ |
| यदापो अघ्न्या इति | १२।९।२।४ |
| यदा प्राह संज्ञप्त पशुरिति | ३।८।२।? |

| कण्डिकाप्रतीकः | का० प्र० ब्रा० क० |
|---|---|
| यदा वा अग्निरनुगच्छति | १०।३।३।८ |
| यदा वै पुरुषः । अस्मा० | १४।८।१२।१ |
| यदा शृतोऽथाभिवासयति | १।२।२।१६ |
| यदि चतुर्थ्यामनुव्याहरेत् | १।४।३।१४ |
| यदि तृतीयस्यामनुव्याहरेत् | १।४।३।१३ |
| यदि दशम्यामनुव्याहरेत् | १।४।३।२० |
| यदि द्वितीयस्यामनुव्याहरेत् | १।४।३।१२ |
| यदि नवम्यामनुव्याहरेत् | १।४।३।१९ |
| यदि पञ्चम्यामनुव्याहरेत् | १।४।३।१५ |
| यदि पालाशान्न विन्देत् | १।३।३।२० |
| यदि मध्यतो यजम्यानुव्या० | १।६।१।१७ |
| यदि श्येनहृतं न विन्देयुः | ४।५।१०।४ |
| यदि षष्ठ्यामनुव्याहरेत् | १।४।३।१६ |
| यदि सप्तम्यामनुव्याहरेत् | १।४।३।१७ |
| यदि सोममपहरेयुः | ४।५।१०।१ |
| यदि ह वा अप्यभ्यक्तः | ११।५।७।४ |
| यदुत्तरस्य हविर्धानस्य | ४।६।९।१२ |
| यदुद्गातोद्गायेत् । यथाक्षेत्र० | १३।२।३।२ |
| यदुभौ नक्तम् । अपाम्मा० | १३।१।५।५ |
| यदुभौ राजन्यौ । अपाम्मा० | १३।१।५।३ |
| यदूर्ध्वं प्रतिष्ठाया अवाचीनं | ८।७।४।२० |
| यदूर्ध्वाः स्तोमा अनुयन्ति | १२।३।१।२ |
| यदेतन्मण्डलन्तपति | १०।५।२।१ |
| यदेव गुदं त्रेधा करोति | ३।८।४।३ |
| यदैतमनुपश्यति । आत्मा० | १४।७।२।१८ |
| यद्ग्रामे यदरण्य इति | १२।९।२।३ |
| यद्दत्तं यत्परादानम् | ९।५।१।४९ |
| यद्देवत्यः पशुर्भवति । तद्देवत्यं | ३।८।३।१ |
| यद्देवा देवहेडनमिति | १२।९।२।२ |

| कण्डिकाप्रतीकः | का० प्र० ब्रा० क० |
|---|---|
| यद्धरिणो यवमत्तीति | १३।२।९।८ |
| यद्ध वा अत्राग्निहोत्रं | २।३।४।१८ |
| यद्ध वा अत्राग्निहोत्र | २।३।४।२० |
| यद्ध लके । इदन्त्रिवृदेति | १२।३।१।१ |
| यद्यद्ध वा अयच्छन्दस | ११।५।७।३ |
| यद्यन्ततो यजम्यानुव्याहरेत् | १।६।१।१८ |
| यद्यरुणदूर्वा न विन्देयु | ४।५।१०।६ |
| यद्यरुणपुष्पाणि न विन्देयुः | ४।५।१०।३ |
| यद्यष्टम्यामनुव्याहरेत् | १।४।३।१८ |
| अद्यहैनम्प्राश्नमचैपी | १०।५।५।२ |
| यद्य दारान्न विन्देयुः | ४।५।१०।५ |
| यद्यु अध्वर्यु । अग्नीषोमयो० | १।८।३।२ |
| यद्यु अध्वर्युः । इ द्वा॰योर्हाज्ञ० | १।८।३।४ |
| यद्यु अस्य हृदय व्येव | २।४।३।५ |
| यद्यु एकं भवति । तदेषा | ३।२।१।३ |
| यद्यु एतदुभयं न विन्देत् | ३।९।२।९ |
| यद्यु एनमुपध वेत् । इष्ट्वा | १।६।२।७ |
| यद्यु ऐन्द्री वैश्वकर्मणी | ४।६।४।६ |
| यद्युक्थ्यः स्यात् । मध्यमं | ३।९।३।२३ |
| यद्युक्थ्यः स्यात् । सोमं | ४।४।२।१८ |
| यद्यु द्वादशोपसद उपेयात् | ३।४।४।१९ |
| यद्यु पश्वेकादशिनी स्यात् | ३।९।१।२३ |
| यद्यु वा एनमुत्तानमचैपीः | १०।५।५।५ |
| यद्यु वा एनन्न्यञ्चमचैपीः | १०।५।५।४ |
| यद्यु वा एनम्प्रत्यञ्चमचैपीः | १०।५।५।३ |
| यद्युष्णीषं विन्देत् । उष्णीषः | ३।३।२।४ |
| यद्येकादश्यामनुव्याहरेत् | १।४।३।२१ |
| यद्येषोखा भिद्येत । याभिन्ना | ६।६।४।८ |
| यद्वास्या पञ्च पुरस्तादुप० | ७।४।२।२७ |

| कण्डिकाप्रतीक | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|
| यद्वेव प्रतिप्रस्थाता सस्रवौ | ४।३।५।२४ |
| यद्वेव प्रत्यवरोहति । एतद्वा | ६।७।३।४ |
| यद्वेव प्रत्यवरोहति । एतद्वा | ६।७।३।५ |
| यद्वेव प्रत्यवरोहति । एतद्वा | ९।१।१।३३ |
| यद्वेन प्रत्यवरोहति । एतद्वा | ९।१।१।३४ |
| यद्वेव प्राणाभृत उपदधाति | ८।१।१।३ |
| यद्वेर प्राणभृत उपदधाति | ८।२।३।३ |
| यद्वेव प्रोक्षति । हविर्वा | ७।३।२।३ |
| यद्वेव माहेन्द्रं ग्रह गृह्णाति | ४।३।३।१७ |
| यद्वेव रथशीर्षे जुहोति | ९।४।१।१५ |
| यद्वेव रुक्म प्रतिमुच्य बिभर्ति | ६।७।१।३ |
| यद्वेव रुक्म प्रतिमुच्य बिभर्ति | ६।७।१।४ |
| यद्वेन रुक्मं प्रतिमुच्य बिभर्ति | ६।७।१।५ |
| यद्वेव रुड्मतीर्जुहोति | ९।४।२।१३ |
| यद्वेव रेत सिचा उपदधाति | ७।४।२।२४ |
| यद्वेवर्तव्या उपदधाति । क्षत्र | ८।७।१।२ |
| यद्वेनर्तव्या उपदधाति । स२० | ८।७।१।३ |
| यद्वेव लोकम्पृणामुपदधाति | ८।७।२।२ |
| यद्वेन लोगेष्टका उपदध ति | ७।३।१।१६ |
| यद्वेव वातहोमाञ्जुहोति | ९।४।२।९ |
| यद्वेव वायव्य पशुर्भवति | ६।२।२।११ |
| यद्वेव वायव्य पशुर्भवति | ६।२।२।१२ |
| यद्वेव वारुणीं जुहोति | ९।४।२।१६ |
| यद्वेव वालखिल्या उपदधाति | ८।३।४।७ |
| यद्वेव विकर्णीं च स्वयमा० | ८।७।३।११ |
| यद्वेव विकर्णीमुपदधाति | ८।७।३।१० |
| यद्वेन निपल्ययते । एतद्वा | ९।१।२।७ |
| यद्वेव विश्वज्योतिषमुपदधाति | ७।४।२।२६ |
| यद्वेव विश्वज्योतिषमुपदधाति | ८।३।२।२ |

| कण्डिकाप्रतीक | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|
| यद्वेव विश्वज्योतिषमुपदधाति | ८।७।१।१६ |
| यद्वेव विष्णुक्रमवात्सप्रे भवत | ६।७।४।७ |
| यद्वेन विष्णुक्रमवात्सप्रे भवत | ६।७।४।८ |
| यद्वेव विष्णुक्रमान्क्रमते । यज्ञो | १।९।३।९ |
| यद्वेव वैश्वकर्मणानि जुहोति | ९।५।१।४३ |
| यद्वेव वैश्वदेव ग्रह गृह्णाति | ४।४।१।९ |
| यद्वेव वैश्वदेवं ग्रह गृह्णाति | ४।४।१।१० |
| यद्वेव वैश्वदेव ग्रह गृह्णाति | ४।४।१।११ |
| यद्वेव वैश्वदेवीरुपदधाति | ८।२।२।४ |
| यद्वेन वैश्वदेवीरुपदधाति | ८।२।२।५ |
| यद्वेव वैश्वदेवीरुपदधाति | ८।२।२।७ |
| यद्वेव वैश्वानर । ऋतवो | ६।२।१।३६ |
| यद्वेव वैश्वानरमारुताञ्जु० | ९।३।१।१३ |
| यद्वेव वैष्ण०यर्चा जुहोति | ३।६।३।१६ |
| यद्वेव वैष्णव्या जुहोति | ३।६।४।२ |
| यद्वेव वैसर्जिनानि जुहोति | ३।६।३।३ |
| यद्वेन व्यतिषजति । आत्मा | ७।३।१।५ |
| यद्वेव व्यतिषजति । आत्मा | ७।३।१।६ |
| यद्वेव सत्रेऽच्छावाके । नत्तु० | ४।३।१।४ |
| यद्वेव सप्तदश सप्तदशो वै | ६।२।२।९ |
| यद्वेव सप्त पुरस्तादुपदधाति | ८।३।४।४ |
| यद्वेव सर्पनामैरुपतिष्ठते | ७।४।१।२७ |
| यद्वेव सर्वे आश्विना भव० | १?।८।२।१७ |
| यद्वेव सर्वौषधं वपति | ७।२।४।१९ |
| यद्वेव सिकता निवपति | ७।१।१।१० |
| यद्वेव सिकता निवपति | ७।३।१।४२ |
| यद्वेव स्तोमभागा उपदधाति | ८।५।३।४ |
| यद्वेव स्तोमानुपदधाति । एतद्वै | ८।४।१।४ |
| यद्वेव स्तोमानुपदधाति । प्रजा० | ८।४।१।६ |

| कण्डिकाप्रतीक | का०प्र०ब्रा०क० |
|---|---|
| यद्वेवैता असपत्ना उपदधाति | ८।५।१।६ |
| यद्वेवैता आश्विनीरुपदधाति | ८।२।१।११ |
| यद्वेवैता आहुतीर्जुहोति | ९।२।२।४ |
| यद्वेवैता इष्टका उपदधाति | ८।३।३।९ |
| यद्वेवैतानि हवींषि निर्वपति | ९।५।१।३६ |
| यद्वेवैता नैर्ऋतीर्हरन्ति | ७।२।१।५ |
| यद्वेवैतान्पशूनालभते | ६।२।१।१४ |
| यद्वेवैतामाहुतिं जुहोति | ३।९।३।१३ |
| यद्वेवैतामाहुतिं जुहोति | ३।९।३।२४ |
| यद्वेवैतामाहुतिं जुहोति | ६।३।१।६ |
| यद्वेवैतामाहुतिं जुहोति | ६।३।१।७ |
| यद्वेवैता राष्ट्रभृतो जुहोति | ९।४।१।२ |
| यद्वेवैते अत्रोपदधाति | ७।४।२।३१ |
| यद्वेवैते अत्रोपदधाति | ८।२।१।१८ |
| यद्वेवैते अत्रोपदधाति | ८।४।२।१६ |
| यद्वेवैते अत्रोपदधाति | ८।७।१।८ |
| यद्वेवैते आहुती जुहोति | ६।३।३।१७ |
| यद्वेवैते हविषी निर्वपति | ६।६।१।७ |
| यद्वेवैनं परिलिखति । एतद्वै | ६।३।३।२४ |
| यद्वेवैनं परिश्रिद्भिः परिश्र० | ७।१।१।१३ |
| यद्वेवैनं परिषिञ्चति । इमे वै | ९।१।२।३ |
| यद्वेवैनं निकर्षति । एतद्वै | ९।१।२।२१ |
| यद्वेवैनं विकर्षति । जायत | ९।१।२।२३ |
| यद्वेवैनं विसृपति । एतद्वा | ७।२।२।१८ |
| यद्वेवैनं शिक्येन बिभर्ति | ६।७।१।१८ |
| यद्वेवैनं समुक्षति । अत्रैष | ९।२।१।१२ |
| यद्वेवैनं समुक्षति । एतद्वै | ९।२।१।१३ |
| यद्वेवैनं सामभिः परिगायति | ९।१।२।३३ |
| यद्वेवैनं हिरण्यशकलैः प्रोक्षति | ८।७।४।८ |

| कण्डिकाप्रतीक. | का०प्र०ब्रा०क० |
|---|---|
| यद्वेवैनदभिजुहोति । शीर्ष० | ७।५।२।२४ |
| यद्वेवैनमभिजुहोति । एतद्वै | ७।२।३।५ |
| यद्वेवैनमभिजुहोति । एतद्वै | ७।२।३।६ |
| यद्वेवैनमभिजुहोति । एतद्वै | ७।२।३।७ |
| यद्वेवैनमभिजुहोति । एतद्वै | ७।४।१।३३ |
| यद्वेवैनमभिजुहोति । शिर | ९।२।३।३१ |
| यद्वेवैनमभिप्लुत्वाभ्यां परिगृ० | ६।७।१।२६ |
| यद्वेवैन्द्राग्न ग्रहं गृह्णाति | ४।३।१ २२ |
| यद्वेवैन्द्र ग्रहं गृह्णाति | ४।३।१।२३ |
| यद्वेवोखामुपदधाति | ७।५।१।२७ |
| यद्वेवोखायाम् । योनिर्वा | ७।५।२।२ |
| यद्वेवोदङ् प्राङ् तिष्ठन् | ६।६।२।३ |
| यद्वेवोदङ् प्राङ् तिष्ठन् | ६।६।२।४ |
| यद्वेवोदचमसा नयति | ७।२।४।७ |
| यद्वेवोदाचन्याच मिमीते | ३।३।२।१५ |
| यद्वेवोदाचन्याच मिमीते | ३।३।२।१६ |
| यद्वेवोपतिष्ठते । अयं वै | ७।२।१।१९ |
| यद्वेवोपतिष्ठते । एतद्वै | ६।७।३।१४ |
| यद्वेवोपरिनाभि । अवाग्वै | ६।७।१।९ |
| यद्वेवोपरिनाभि । एतद्वै | ६।७।१।१० |
| यद्वेवोपरिनाभि । यद्वै | ६।७।१।११ |
| यद्वेवोपांशु । प्राजापत्यं वा | ६।२।२।२१ |
| यद्वेवोपांशु । रेतो वा अत्र | ६।२।२।२२ |
| यद्वेवोभयत क्ष्णुत् । अतो | ६।३।१।३५ |
| यद्वेवोभयत क्ष्णुत् । एतद्वा | ६।३।१।३६ |
| यद्वेवोलूखलमुसले उपदधा० | ७।५।१।१६ |
| यद्वेवोपाग्निर्वपति । प्रजापति | ७।१।१।७ |
| यद्वै किञ्चानूक्तम् । तस्य | १४।४।३।२६ |
| यद्वै चतुर्विंशमह । दश० | १०।२।३।२ |

| कण्डिकाप्रतीकः | का०प्र०ब्रा०क० |
|---|---|
| यो ह वै प्रजातिं वेद | १४।९।२।६ |
| यो ह वै प्रतिष्ठां वेद। प्रति। | १४।९।२।३ |
| यो ह वै वसिष्ठां वेद | १४।९।२।२ |
| यो ह वै शिशुम्। साधान | १४।५।२।१ |
| यो ह वै सम्पदं वेद। स हास्मै | १४।९।२।४ |

( र )

| कण्डिकाप्रतीकः | का०प्र०ब्रा०क० |
|---|---|
| रक्षोभ्यो वै ता भीता वाच० | ४।२।२।७ |
| रक्षोहणं वलगहनमिति | ३।५।४।९ |
| रथन्तरं दक्षिणे पक्षे | ९।१।२।३६ |
| रथीरध्वराणामिति। एतेन | १।४।२।११ |
| रश्मिना सत्याय सत्यञ्जिन्वेति | ८।५।३।३ |
| राजानं क्रीत्वा पर्युह्य | ७।३।१।४ |
| राजानं प्रणयति। उद्यत | ४।६।८।७ |
| राजानं प्रणयति। उद्यत | ४।६।८।१२ |
| राजानं प्रणयति। उद्यत | ४।६।८।१७ |
| राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य | २।३।४।२९ |
| राजानमुन्नीय। आदित्यानां | ४।३।५।१९ |
| राजा वा एष यज्ञानां | १३।२।२।१ |
| राजा वै राजसूयेनेष्ट्वा | ५।१।१।१३ |
| राज्ञ एव राजसूयम् | ५।१।१।१२ |
| राज्यसि प्राची दिक् | ८।३।१।१४ |
| रात्रिं सन्तमन्तर्यामम् | ४।१।२।१४ |
| रात्रिरेव पूर्णमा। पूर्णेव | ११।२।४।४ |
| राधसीःसम्पृञ्चानावसम्पृ० | ३।७।४।११ |
| राष्ट्रं वा अश्वमेधः। राष्ट्र | १३।१।६।३ |
| राष्ट्रं वा आसन्दी। अपरि० | १२।८।३।६ |
| राष्ट्रं साम्राज्यम्। सयो ह | ११।२।७।१७ |
| रुक्मं प्रतिमुच्य बिभर्ति | ६।७।१।१ |
| रुद्राः संसृज्य। पृथिवीं | ६।५।१।७ |
| रुद्रास्त्वाञ्जन्तु। त्रैष्टुभेन | १३।२।६।५ |
| रूपमेव वयोरादत्त | ११।८।३।८ |
| रूपाण्येव यस्यायतनम् | १४।६।९।१२ |
| रेत एव यस्यायतनम् | १४।६।९।१८ |
| रेतस इति मा वोचत | १४।६।९।३४ |
| रेतो होच्चक्राम। तत्सर० | १४।९।२।१२ |
| रेवती रमध्वमिति। रेवन्तो | २।३।४।२६ |
| रेवती रमध्वमिति। रेवन्तो | ३।७।३।१३ |
| रोहिण्यामग्नी आदधीत | २।१।२।६ |
| रोहिण्यामु ह वै पशवः | २।१।२।७ |

( ल )

| कण्डिकाप्रतीकः | का०प्र०ब्रा०क० |
|---|---|
| लाजैर्जुहोति। नक्षत्राणां | १३।२।१।५ |
| लोकं पृण छिद्रं पृणेति | ८।७।२।६ |
| लोकः प्राशित्रम्। स यो ह | ११।२।७।१९ |
| लोमभ्य एवास्य चित्तमस० | १२।७।१।९ |

( व )

| कण्डिकाप्रतीकः | का०प्र०ब्रा०क० |
|---|---|
| वडवानुशिशुर्दक्षिणा भव० | १२।७।२।२१ |
| वडवानुशिशुर्भवति। यश | १२।७।२।८ |
| वडवेतराभरत्। अश्वरूप | १४।४।२।८ |
| वत्सो वा एष। एतस्यै | ४।२।४।२१ |
| वनीवाह्येताग्निं बिभ्रदित्याहुः | ६।८।१।१ |
| वपा पशुपुरोडाशः। तत्पष्टिः | ६।२।२।१५ |
| वपामभितो जुहोति | १३।२।११।२ |
| वर्षं हि त्वा। प्रथति यज्ञे | ३।४।४।१२ |

| कण्डिकाप्रतीक | का०अ०ब्रा०क० |
|---|---|
| वयश्छन्द इति । अन्नं वै | ८।५।२।६ |
| वरुण सम्राट् सम्राट्पति | ११।४।३।१० |
| वरुणप्रघासैर्वै प्रजापतिः | २।५।३।१ |
| वरुणसवो वा एष यद्राज० | ५।४।३।२१ |
| वरुणाद्ध वा अभिषिषिचाना० | ५।४।३।२ |
| वरुण द्ध वा अभिषिषिचाना० | ५।४।५।१ |
| वरुणाय स्वाहेति । वरुणो | १४।३।२।१४ |
| वरुणो हैनद्राज्यकाम आदधे | २।२।३।१ |
| वरूत्रीष्ट्वा देवी । विश्वदे० | ६।५।४।६ |
| वर्चो द्र विश इति । य एव | ८।४।१।१६ |
| वशामालभन्ते । तामालभ्य | ४।५।२।१ |
| वसन्तो ग्रीष्मो वर्षा | ७।१।३।१ |
| वसवस्त्वाच्छृन्दन्तु | ६।५।४।१७ |
| वसवस्त्वाञ्जन्तु । गायत्रेण | १३।२।६।४ |
| वसवस्त्वा धूपयन्तु । गाय० | ६।५।३।१० |
| वसिष्ठ ऋषिरिति । प्राणो वै | ८।१।१।६ |
| वसुवने वसुधेयस्येति | १।८।२।१५ |
| वसूनां भागोऽसि । रुद्राणा० | ८।४।२।७ |
| वसूनां रातौ स्याम । रुद्राणा० | १।५।१।१७ |
| वागनुष्टुबिति । तद्य एव | १०।३।१।४ |
| वागिन्द्रो बलम् । यदैन्द्रो | १२।७।२।६ |
| वागेव ग्रह । वाचा हीद | ४।६।५।२ |
| वागेवर्चश्च सामानि च | ४।६।७।५ |
| वागेवर्चश्च सामानि च | ४।६।७।१९ |
| वाग्घ वा अस्यैन्द्रवायवः | ४।१।३।१ |
| वाग्घ वा एतस्याग्निहोत्रस्या० | ११।३।१।१ |
| वाग्घोचकाम । सा संवत्सर० | १४।९।२।८ |
| वाग्वै ग्रहः । स नाम्नाति० | १४।६।२।४ |
| वाग्वै भर्ग । प्राणो मह० | १२।३।४।१० |
| वाचं यच्छति । स वाचंयम | ३।२।२।१ |
| वाचः सत्यमशीयेति | १४।३।२।२० |
| वाचं धेनुमुपासीत । तस्या० | १४।८।९।१ |
| वाचे स्वाहेति । मुखमेवा० | १४।३।२।१७ |
| वाचो विधृतिमग्निं प्रयुज | ६।६।१।१८ |
| वाजस्य नु । प्रसव आबभू० | ५।२।२।७ |
| वाजस्य मा प्रसवः । उद्ग्राभे० | १।२।३।२१ |
| वाजस्येमाम् । प्रसव शिश्रिये | ५।२।२।६ |
| वाजे वाजेऽवत । वाजिनो | ५।१।५।२४ |
| वातस्य त्वा ध्राजया इति | ३।८।३।२१ |
| वातहोमैर्युनक्ति । प्राणा वै | ९।४।२।१० |
| वामदेव्यमात्मन् । प्राणो वै | ९।१।२।३८ |
| वामदेव्यं मैत्रावरुणसाम | १३।३।३।४ |
| वामनो ह विष्णुरास । तद्देवा | १।२।५।५ |
| वायवे त्वा जुष्टम्प्रोक्षामीति | १३।१।२।७ |
| वायवे स्वाहेति । वायुर्वै | १४।३।२।७ |
| वायव्यं श्वेतमुच्छे | १३।२।२।१ |
| वायु पशुगसीत् | १३।२।७।१४ |
| वायुरनिलममृतमथान्त | १४।८।३।१ |
| वायुरसि तिग्मतेजा इति | १।२।४।७ |
| वायुर्वै गौतम तत्सूत्रम् | १४।६।७।६ |
| वायुष्ट्वा पचतैरवत्विति | १३।२।७।२ |
| वायो पूत पवित्रेण | १२।७।३।१९ |
| वायोः पूतः पवित्रेण | १२।७।३।१० |
| वारवन्त्युत्तरा भवति । वरुणो | २।५।२।१० |
| वार्त्रघ्नं वै पौर्णमासम् | १।६।४।१२ |
| वार्त्रहत्याय शवसे । सहदानु | ९।५।२।४ |
| वालेन पाययन्ति । गोऽश्व० | १२।८।१।१४ |
| विंशतिमात्मनोऽकुरुत | १०।४।२।१६ |

## ( श )

| कण्डिकाप्रतीकः | का०प्र०ब्रा०क० |
|---|---|
| स इमां पृथिवीं प्रविवेश | १।२।३।७ |
| स इमाँल्लोकान्त्सृष्ट्वाकामयत | ६।१।२।५ |
| स इमाँस्त्रींल्लोकानभितताप | ११।५।८।२ |
| स इमाँस्त्रीन्वेदानभितताप | ११।५।८।४ |
| स इमानि त्रीणि ज्योतीं० | ११।५।८।३ |
| स उ एव प्राणतेजाः | १०।२।६।१५ |
| स उ एव मखः स विष्णुः | १४।१।१।१३ |
| स उ एव यजुस्तेजाः | १०।२।६।१२ |
| स उद्गृह्णति । धामभेणा० | ३।७।१।१४ |
| स उत्तरस्यामेव पयस्याया | २।५।२।१७ |
| स उत्तरस्यामेव वेदौ । उत्तर० | २।५।२।६ |
| स उत्तरेण निष्क्रामति | ३।९।२।१५ |
| स उत्पुनाति । सवितुर्वः | १।१।३।६ |
| स उत्पुनाति । सवितुर्वः | ५।३।५।१६ |
| स उत्पुनाति । सवितुस्त्वा | १।३।१।२२ |
| स उदीक्षते स्वयम्भूरसि | १।९।३।१६ |
| स उद्वपति । ऋजवे | १४।१।२।२२ |
| स उद्वास्याग्नौ द्वे आहुती | २।४।२।११ |
| स उपतिष्ठते अग्ने गृहपते | १।९।३।१९ |
| स उपदधाति । तपश्च तप० | ८।७।१।५ |
| स उपदधाति । तया देवत० | ६।१।२।२८ |
| स उपदधाति । ध्रुवक्षिति० | ८।२।१।४ |
| स उपदधाति । ध्रुवमसि | १।२।१।७ |
| स उपदधाति । विमान एष | ९।२।३।१७ |
| स उपमजति । समुद्रं | ३।८।४।११ |
| स उपसृजति । स्वात्रा स्थ | ३।९।४।१६ |
| स उपस्तृणीत आज्यम् | २।६।१।२७ |
| स उपस्तृणीत आज्यम् | २।६।१।३१ |
| स उपस्पृशति । आ मा | ५।१।५।२६ |
| स उपहवमिष्ट्वा भक्षयति | १४।३।१।३१ |
| स उपह्वयते । उपहूतं रथ० | १।८।१।१९ |
| स उपांशुमेव प्रथममवकाश० | ४।५।६।२ |
| स उपावहरति । इन्द्रस्य | ५।४।३।४ |
| स उपावहरति । एषा वः | ५।१।५।११ |
| स उपावहरति । हृदे त्वा | ३।९।३।४ |
| स उपैति । प्रागपागुदग० | ३।९।४।२७ |
| स उल्मुकमादत्ते । अग्ने | ५।२।४।१६ |
| स उ वा इष्टकैकशतविधः | १०।२।६।११ |
| स ऋचो व्यौहत् | १०।४।२।२३ |
| स ऋतुभिरेव सप्तविधः | १०।२।६।२ |
| स एतमाश्विनन्धूम्रमालभेत | १२।७।२।३ |
| स एता अपश्यत् । ऊर्ध्वी | ६।२।१।३२ |
| स एता अपश्यत् । समा० | ६।२।१।२६ |
| स एतान्पञ्च पशूनपश्यत् | ६।२।१।२ |
| स एतान्पञ्च पशूनपश्यत् | ६।२।१।४ |
| स एतान्पञ्च प न्प्राविशत् | ६।२।१।३ |
| स एतेन यजुषा । सक्रुज्जु० | १।३।२।१८ |
| स एतामैन्द्रीं मरुत्वतीमज० | २।५।२।२७ |
| स एतास्तिस्रस्तनूरेषु लोकेषु | २।२।१।१४ |
| स एतेन यज्ञेन । देवेभ्य | ११।१।८।४ |
| स एतेनाग्नेन शान्तः | २।२।१।२ |
| स एतैः सुप्तः । न कस्य | १०।५।२।१५ |
| स एव पुरुषः प्रजापतिरभवत् | ६।१।१।५ |
| स एष इह प्रविष्टः | १४।४।२।१६ |
| स एष एव मृत्युः | १०।५।२।३ |
| स एष एव मृत्युः | १०।५।२।१३ |
| स एष एव मृत्युः | १०।५।२।२३ |
| स एष एव लोकम्पृणा | १०।५।२।८ |

| कण्डिकाप्रतीकः | का०अ०ब्रा०क० |
| --- | --- |
| सोऽब्रवीत् । पतद्यलङ्काप्यं | १४।६।७।४ |
| सोऽब्रवीत् । यावद्यावद्वै | ६।१।२।२३ |
| सोऽभिघारयति । सन्ते मनो | ३।८।३।९ |
| सोऽभिमृशति । अग्निष्टे त्वचं | १।२।२।१२ |
| सोऽभिमृशति।आस्माकोऽसीति | ३।३।२।७ |
| सोऽभिमृशति । ध्रुवा अस० | १।३।४।१६ |
| सोऽभिमृशति । मा भेर्मा | १।२।२।१५ |
| सोऽभिवासयति । अतमेरु० | १।२।२।१७ |
| सोऽभिपिञ्चति । देवस्य त्वा | ५।२।२।१३ |
| सोऽभ्यादधाति । वीतिहोत्रं | १।३।४।६ |
| सोऽभ्युक्षति । सिंहासि | ३।५।१।३६ |
| सोऽभ्रिमादत्ते । देवस्य त्वा | ३।५।४।४ |
| सोऽभ्रिमादत्ते । देवस्य त्वा | ३।६।१।४ |
| सोमं गच्छ स्वाहेति । रेतो | ३।८।५।२ |
| सोमं राजानम् । अवसेऽभि० | ५।२।२।८ |
| सोम राजन्विश्वास्त्वं प्रजा | ३।९।३।६ |
| सोमस्य तनूरसि विष्णवे | ३।४।१।१० |
| सोमस्य त्वा द्युम्नेनाभिषि० | ५।४।२।२ |
| सोमस्य दात्रमसीति | ५।३।५।१८ |
| सोमाय वनस्पतये स्वाहेति | ५।४।३।१६ |
| सोमाहुतयो ह वा एता | ११।५।६।६ |
| सोमेनेष्ट्वा सौत्रामण्या यजेत | १२।८।२।२ |
| सोमो राजा राजपतिः | ११।४।३।९ |
| सोमो वै पयोमहाः | १२।७।३।१७ |
| सोमो वै प्रवर्ग्यः । सर्वं | १४।३।२।३० |
| सोमो वै राजा यज्ञः प्रजा० | १२।६।१।१ |
| सोमोऽस्यश्विभ्याम्पच्यस्व | १२।७।३।६ |
| सोऽयं पुरुषः प्रजापतिरका० | ६।१।१।८ |
| सोऽयं यज्ञो वाचमभिदध्यौ | ३।२।१।२५ |

| कण्डिकाप्रतीकः | का०अ०ब्रा०क० |
| --- | --- |
| सोऽयं विष्णुर्ग्लानः । छन्दो० | १।२।५।८ |
| सोऽयन्द्विपात्पुरुषः । पशुषु | ११।२।२।४ |
| सोऽयमग्निः सृष्ट आविर० | १०।५।३।११ |
| सोऽयमात्मा त्रेधाविहित एव | १०।५।१।३ |
| सोऽयास्य आङ्गिरसः | १४।४।१।२१ |
| सोऽर्चञ्छ्राम्यंश्चचार प्रजाकाम. | १।८।१।७ |
| सोऽर्चञ्छ्राम्यंश्चचार प्रजाकामः | २।९।१।४ |
| सोऽर्चञ्छ्राम्यंश्चचार प्रजा० | ११।१।६।७ |
| सोऽर्चञ्छ्राम्यन्प्रजापतिरीक्षा० | २।५।१।३ |
| सोऽवतिष्ठति । हंसः शुचि० | ५।४।३।२२ |
| सोऽवनयति । ध्रुवं ध्रुवेण | ४।२।४।२३ |
| सोऽवनयति । रक्षोहणो वो | ३।५।४।२० |
| सोऽवस्तृणाति । रक्षोहणो वो | ३।५।४।२१ |
| सोऽवेक्षते । तेजोऽसि शुक्र० | १।३।१।२८ |
| सोऽवेक्षते । सत्यं वै चक्षु. | १।३।१।२७ |
| सोऽवेत् । अहं वाव सृष्टि० | १४।४।२।१० |
| सोऽवेत् । पाप्मानं वा | ११।१।६।९ |
| सोऽश्वमभिमन्त्रयते । स वातो | ६।४।४।२ |
| सोऽश्वमभिमन्त्रयते । प्रतूर्तं | ६।३।२।२ |
| सोऽश्वमुत्क्रमयति । प्रतूर्व० | ६।३।२।७ |
| सोऽष्यन्तीमद्भिरभ्युक्षति | १४।९।४।२२ |
| सोऽसावाज्यमधिश्रयति | १।२।२।६ |
| सोऽस्यैष चित्य आसीत् | ६।१।२।१६ |
| सोऽस्यैष सुकृत.आत्मा | ८।६।२।१८ |
| सो हेयमीक्षाञ्चक्रे । कथन्नु | १४।४।२।६ |
| सौमापौष्णं श्याममालभ्याम् | १३।२।२।६ |
| सौम्येन चरुणा प्रचरति | ४।४।२।१ |
| सौम्योऽध्वरः प्रथमा चितिः | १०।१।५।३ |
| सौरीभ्यामृग्भ्यां जुहोति | ४।३।४।८ |

## ( ह )



# * त्रुटिपरिमार्जनम् *

त्वरया प्रकाशनमुपगतायामस्यामनुक्रमणिकायां दृष्टिदोषात् तत्तत्स्थानस्खलिताः काण्डिकाप्रतीका इह निर्दिश्यन्ते—

( अ )

अंशुं गृह्णाति । सर्वत्वायैव ५।१।२।१
अंशूनेवाधूनोति । श्रेशी० ११।५।९।८
अंसदघ्ना भवति । अंस० १४।१।३।१०
अग्ने तव श्रवो वय इति ७।३।१।२९
अजायै पयसाच्छृणत्ति ६।५।४।१६
अञ्जलिना । न ह्येतस्येतीबा० ९।४।२।४
अथ पशोः प्राणानद्भिः ३।८।२।४
अथ बाहू विमार्ष्टि । मित्र० ५।३।५।२८
अथ यदा सुपुप्तो भवति १४।५।१।२१
अथ यद् ध्रुवायामाज्यं परि० ३।१।४।१७
अथ वा अतोऽह्नाविवाहः १२।२।३।११
अथ वालखिल्या उपदधाति ८।३।४।१
अथाग्रेण शालां तिष्ठन्नभ्यङ्क्ते ३।१।३।७
अथाध्यात्मम् । प्राणो वा १०।६।२।४
अथाहवनीय एव पुष्करपर्णमुप० ७।३।१।९
अथैनच्छङ्कुभिः परिणिहन्ति १३।८।४।१
अष्टौ वसवः । एकादश ४।५।७।२

( इ )

इदमेवान्तरिक्षम् । तस्मादे० ९।३।१।५
इन्द्रस्तुदस्यो द्वितीयमह० १३।७।१।४

( ओ )

ओ श्रावयेति वै देवाः १।५।२।२०

( त )

तदाहुः । अन्तिके मृत्युर्दूरा १०।५।२।१७
तस्य वा एतस्य ग्रहस्य ४।१।३।१५
तेऽग्निनैव त्वचं विपल्याश्रयन्त ३।४।३।४
ते देवा वायुमब्रुवन् । वायविमं ४।१।३।७

( न )

निधायोदहरणं त्रिर्विच्यते ९।१।२।६

( प )

षड्भिश्चतुर्भिरेवग्निति १३।२।७।६

( फ )

फल्गुनीष्वग्नी आदधीत २।१।२।११

( य )

युनक्त सीरा वियुगा तनुध्व० ७।२।२।५

( स )

स गृह्णाति । मयि गृह्णाम्यग्रे ७।४।१।२
स यदि वृष्टिकामः स्यात् १।५।२।१९
स वै दक्षिणेऽग्नौ जुहोति २।५।२।२५



